ज्ञानामृत

दिसम्बर, 1984 वर्ष 20 ❋ अंक 6 मूल्य 1.35

1

2

1 ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी, विदेश यात्रा के समय उन्हे प्राप्त पीसमैडल तथा लॉस एन्जलज, फ्रैंकफर्ट तथा साओ पॉलो शहर से प्राप्त चाबियों सहित

2 इन्दौर स्थित 'ओम शान्ति भवन' के प्रांगण में मध्यप्रदेश के राज्यपाल भ्राता के० एम० चांडी जी

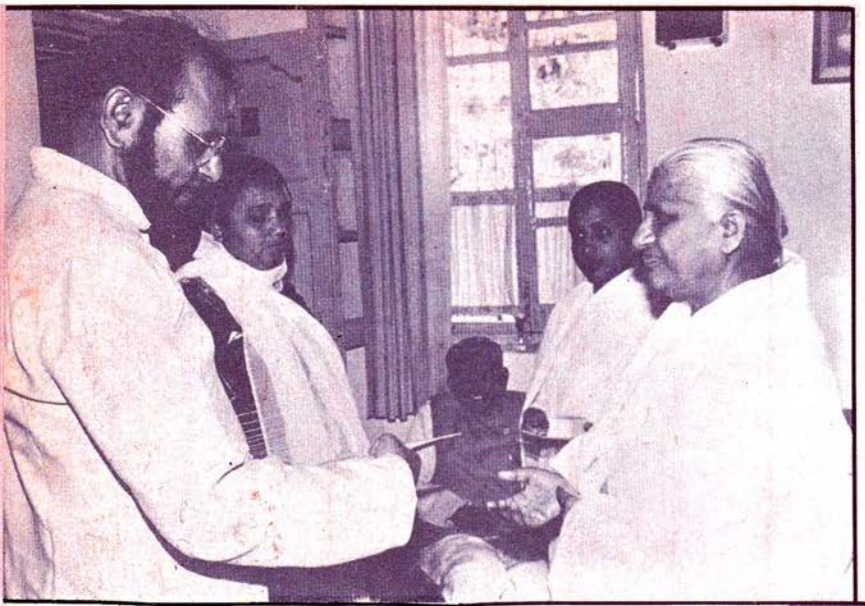

आबू पर्वत पर पाण्डव भवन में ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी सऊदी अरब के यातायात मंत्री भ्राता मुहमद सुती जी को ईश्वरीय देते हुए।

चन्द्रपुर में आयोजित 'विश्व कल्याण आध्यात्मिक मेला' का उद्घाटन दृश्य। चित्र में (दाएं से) ब्र० कु० इन्द्रा, ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी, प्रशासिका देहली क्षेत्र, श्रीमति यशोधरा बजाज राज्यमन्त्री महाराष्ट्र ब्र० कु० कुसुम, भ्राता राजीव सिन्हा, जिलाधिकारी चन्द्रपुर तथा अन्य।

बम्बई—कोलाबा सेवाकेन्द्र पर श्रीमति इन्द्रा गांधी के निधन पर एक योग सभा आयोजित की गई। चित्र में श्रीमति माथुर, अध्यक्षा स्त्री सभा, समाजसेवी श्रीमति बकुला रजनी पटेल, श्रीमति मिथा शराफ़, अध्यक्षा लाइनेस, बम्बई, श्रीमति रहमत फ़ज़लभाई, सक्रिय समाजसेवी विराजमान हैं।

टोक्यो में भ्राता जगदीश जी 'विचार प्रणाली तथा मानसिक स्वास्थ्य' विषय पर बोलते हुए। साथ में जापान के प्रसिद्ध डाक्टर भ्राता हितोशी इशिकबा बैठे हैं।

ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी की विदेश यात्रा से वापिस आबू पर्वत पर पहुंचने पर वहां की सोलह संस्थाओं सहित आबू के गणमान्य व्यक्तियों द्वारा हार्दिक स्वागत किया गया।

मध्यप्रदेश के राज्यपाल भ्राता के० एम० चांडी को इन्दौर स्थित 'ओम शान्ति भवन' में 'सृष्टि दर्शन' संग्रहालय का अवलोकन करवाते हुए ब्र० कु० ओमप्रकाश जी।

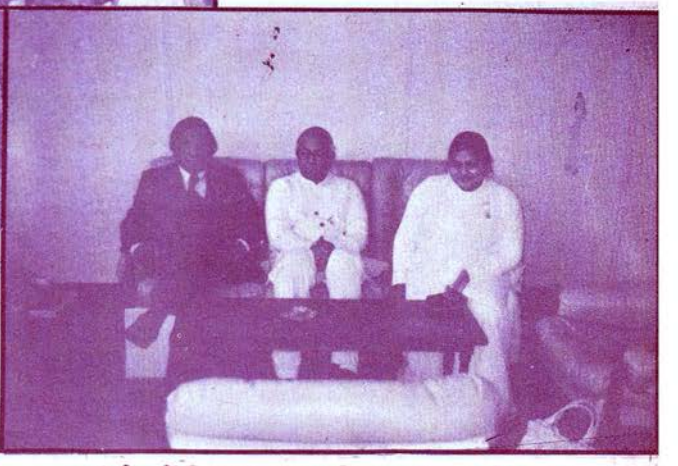

न्यूज़ीलैन्ड में नियुक्त भारत के उच्चायुक्त को ब्र० कु० भ्राता जगदीश जी ईश्वरीय सन्देश देने के पश्चात् उनके साथ बैठे हैं। ब्र० कु० भावना साथ में है।

जयपुर में दादी जी के अभिनन्दन समारोह में भूतपूर्व मुख्य न्यायाधिपति भ्राता भगवती प्रसाद बेरी जी दादी जी का स्वागत करते हुए।

भ्राता एस० बेशया, स्थानीय रेडियो निदेशक, तेलंगा बाजार, कटक संग्रहालय देखने पधारे। वे सभा को सम्बोधित कर रहे हैं।

Regd. No. 10563/65-D, (E)—70

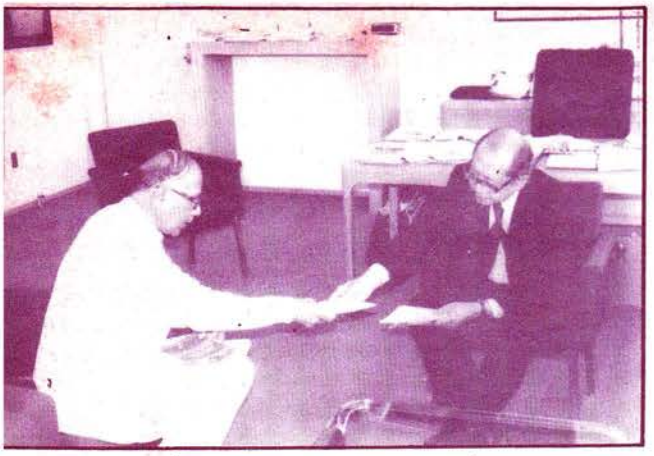

जापान में संयुक्त राष्ट्र संघ की पीस युनिवर्सिटी के रिक्टर को 'युनिवर्सल पीस डाकुमेन्टस' भेंट देते हुए ब्र० कु० जगदीश चन्द्र जी।

आदरणीय दादी जी के स्वदेश आगमन पर अहमदाबाद में हुए स्वागत समारोह के लिये स्वागत कमेटी के सदस्य स्वामी मनुवर्य जी दादी जी से सौगात ले रहे हैं।

ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी की विदेश यात्रा से वापसी पर विट्ठल भाई पटेल हाऊस, नई दिल्ली में एक पत्रकार सम्मेलन का दृश्य। भ्राता भारत भूषण जी समाचार सम्पादक पी० टी० आई बड़े ध्यान से सुनते हुए।

अलीगढ़ में आयोजित आध्यात्मिक मेले का अवलोकन कराने पश्चात् ब्र० कु० सुदेश जी भ्राता आर० आर० पटेल, ऐक्साइज़ सुपरिटैंडैंट अलीगढ़ को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए।

आबू पर्वत पर प्रसिद्ध अभिनेता भ्राता प्रदीप कुमार जी को ब्र.कु.आनंद किशोर जी ईश्वरीय ज्ञान के रहस्य समझाते हुए।

पुरतगाल में एक सभा में ब्र० कु० शशी बहन सम्बोधित करते हुए।

अमृत-सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ	क्रम सं०	विषय	पृष्ठ
१.	केवल परमात्मा ही सच्चा गुरु है	१	९.	आपने मुरली कितने ध्यान से पढ़ी है ?	२०
२.	खून-ए-नाहक (सम्पादकीय)	२	१०.	प्रेम की नींव पर रामराज्य की चारदीवारी	२१
३.	"मधुबन"—एक अद्भुत तपस्थली	५	११.	वे लोग मुझे अच्छे नहीं लगते	२५
४.	अब युग परिवर्तन होगा	९	१२.	गीत	२७
५.	वर्तमान युग और वैवाहिक जीवन	१२	१३.	परमाणु युग बनाम पुरुषोत्तम युग	२८
६.	सुस्ती बुरी बला	१४	१४.	शिव बाप की गैरन्टी (कविता)	२९
७.	निश्चय बुद्धि विजयन्ति	१६	१५.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	३०
८.	सचित्र समाचार	१८			

केवल परमात्मा ही सच्चा गुरु है

मनुष्य अपने जीवन में अनेक प्रकार की विद्याएँ, कलाएँ (Art), विज्ञान (Sciences) अथवा हुनर (Skill, craft) सीखता है। वह जिस व्यक्ति से कुछ भी सीखता है, उसे वह प्रायः अपना 'गुरु' मानता है। परन्तु वास्तव में 'गुरु' शब्द के पीछे एक आध्यात्मिक भूमिका है। 'गुरु' की उपाधि हम केवल उसे ही दे सकते हैं जो आत्मा को सत्य का मार्ग दर्शाये, उसे पतित से पावन बनाए, उसे अधोगति से सद्गति में ले जाय अथवा मुक्ति और जीवन्मुक्ति की प्राप्ति के योग्य बनाये ताकि मनुष्य के जीवन में विकार, अशांति, दुःख, मृत्यु, कलह-क्लेश, कमी-कमज़ोरी और कमबख्ती न रहे। अन्य जितनी भी विद्याएँ, विज्ञान इत्यादि सिखाने वाले हैं, उन्हें 'शिक्षक', अध्यापक, प्राध्यापक इत्यादि उपाधियाँ दी जा सकती हैं, 'गुरु' की उपाधि नहीं दी जा सकती।

अब स्पष्ट है कि मनुष्य के मनोविकार वही मिटा सकता है जो कि स्वयं सदा निर्विकारी हो, उसकी अशान्ति, उसका दुःख और कलह-क्लेश वही हर सकता है जो स्वयं शान्ति का सागर हो, उसकी कमी को वही दूर कर सकता है जो स्वयं परिपूर्ण हो, कमज़ोरी वह हटा सकता है जो स्वयं सर्व शक्तिमान् और सर्व समर्थ हो और कमबख्ती को वह सुधार सकता है जो कर्मों की गति को पूर्ण रीति से जानता हो। ऐसा परिपूर्ण, सर्वसमर्थ, शान्ति का सागर तो केवल परमपिता परमात्मा ही है जिन्हें कल्याणकारी होने के कारण 'शिव' कहा जाता है।

'परमात्मा गुरु हैं,' इस सत्य सिद्धान्त से कई लोग अपनी बाल-बुद्धि से यह अर्थ निकाल लेते हैं कि 'गुरु परमात्मा है, अथवा गुरु ही साक्षात् परब्रह्म अथवा परमेश्वर है'। यह उनकी भूल है। जन्म-मरण के चक्कर में आने वाले, रोग, बुढ़ापा इत्यादि भोगने वाले, साधना द्वारा मुक्ति की कामना अथवा पुरुषार्थ करने वाले किसी भी अल्पज्ञ मनुष्य को 'परमात्मा' मानना अन्ध-श्रद्धा के सिवा कुछ नहीं है। परमात्मा एक है, वह निराकार है, वह माता के गर्भ से जन्म नहीं लेता, वह सर्व शक्तिमान् और कल्याण-कारी है, उसका कोई माता-पिता या गुरु नहीं, उसको भूलकर किसी मनुष्य को गुरु मानने से मनुष्य पाप का भागी बनता है।

सम्पादकीय

ख़ून-ए-नाहक

हमारे देश की तत्कालीन प्रधानमन्त्री इन्द्रा प्रियदर्शिनी जी की जिस प्रकार से निर्मम हत्या की गई, वह तो एक अमानवीय और निन्दय कर्म था ही परन्तु उसकी प्रतिक्रिया के रूप में जो सैंकड़ो निरपराध लोगों की हत्या की गई, वह भी उतना ही जघन्य कर्म था। किसी भी धर्म की दृष्टि से उस कर्म को या उससे पहले पंजाब में हुए हत्या-काण्डों को स्वीकार्य नहीं माना जा सकता। इस प्रकार के घृणा-भरे हिंसात्मक हमले, 'खूने-नाहक' की संज्ञा के अन्तर्गत सम्मिलित होते हैं। निरपराध लोगों को पकड़-पकड़कर ज़िन्दा जला देना, उन्हें चुन-चुनकर पत्थरों से मारना, उनकी सारी सम्पत्ति को जला कर राख कर देना—यह क्रोध और घृणा की सीमा को भी उलांघ कर दानवता का प्रदर्शन है।

यह भारत भूमि, पुण्य भूमि, देव भूमि अथवा स्वर्ग भूमि के नाम से ज्ञात थी जहाँ शेर और गाय भी एक घाट से पानी पी सकते थे और जहाँ राजा को कोई दण्ड संहिता बनाने की आवश्यकता ही नहीं थी। २५०० वर्ष तक यहाँ सुख शान्ति के साज़ बजते रहे। यहाँ न कोई मातम था, न डकैती, न चोरी चकारी और न कोई अपराध—किसी के ख़ून का कतरा बहाने की तो बात ही छोड़ दीजिए। समय चक्र के परिवर्तन से लोगों में थोड़ा-थोड़ा वैर-वैमनस्य शुरू हुआ और लोगों ने राज्य की रक्षा के लिए सेना बनाने की आवश्यकता अनुभव की। उस रक्षा के कार्य के लिए सशस्त्र लोगों को उस युग में क्षत्रिय नाम दिया गया। मनुष्य ने भूल यह की कि उसने रक्षा की आवश्यकता को महसूस करते हुए यह कहना शुरू किया कि जो युद्ध के क्षेत्र में मरता है, वह स्वर्ग जाता है। इस प्रकार से हिंसा की प्रशंसा होने लगी और क्षत्रित्व को 'क्षात्र धर्म' और वीरता का नाम दिया जाने लगा और ऐसा वीर ही राजा अथवा राज्याधिकारी माना जाने लगा। यद्यपि अब विदेशों से भारत पर आक्रमण होने लगे थे और देश में भी कोई-कोई अपराध करने वाला व्यक्ति जहाँ-तहाँ-वहाँ मिल जाता था और इसलिए रक्षा के कार्य को महत्त्व दिया गया तथापि अपराध तब भी नगण्य ही थे। मैगस्थनीज़, फाह्यान और ह्यूनसांग इत्यादि इतिहास लेखकों की यात्रा-स्मृतियों से यह बात स्पष्ट है कि यहाँ बड़े-बड़े अपराध न के बराबर ही थे।

सेना भी रक्षा के लिए जब युद्ध करती थी तब वह युद्ध के नियमों का भी पालन करती थी। पुराने ग्रन्थों में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि फ़ौज फ़ौज से लड़ती थी और वह नगर-निवासियों पर आक्रमण नहीं करती थी। इसके अतिरिक्त योद्धा लोग सोये हुए या शस्त्र रहित व्यक्ति पर, स्त्री, वृद्ध या बच्चे पर आक्रमण नहीं करते थे और जो क्षमा याचना करे, न लड़ना चाहे या आत्म-समर्पण कर दे या स्वयं को निरपराध सिद्ध करे, उसे वे शरण देते थे और उसकी हत्या करना युद्ध के नियमों के विरुद्ध माना जाता था। परन्तु अब ऐसा समय आ गया है कि जो प्रधान मन्त्री की रक्षा के निमित्त नियुक्त थे, उन्होंने ही कर्त्तव्य विमुख होकर एक निहत्थी माता अथवा बहन, जिसने उनमें विश्वास किया था, पर अचानक ही वार किया। परन्तु किसी भी जाति, सम्प्रदाय, समाज अथवा देश के कुछ अपराध-प्रिय व्यक्ति कुछ अपराध करते हैं तो उनके कारण उस जाति अथवा सम्प्रदाय के सैंकड़ों या हज़ारों लोगों को भून डालना अथवा उनकी सम्पत्ति को ध्वस्त करना भी दानवता से कम नहीं।

हर धर्म संहिता में कहा गया है कि मनुष्य को चाहिए कि वह घृणा, क्रोध और हिंसा न करे और सबसे भाई-भाई के जैसा प्रेम और सद्भावना से बात करे अथवा पड़ौसी से ऐसा व्यवहार करे जैसा कि वह उनका अपने साथ चाहता है। अतः पंजाब में जो हत्या-काण्ड होते रहे हैं, अथवा गत मास देहली तथा अन्य राज्यों में जो ख़ून-ख़राबा हुआ है, उसे तो हर धर्म-प्रिय व्यक्ति अधर्म,

अन्याय, अत्याचार अथवा पाप कर्म ही की संज्ञा देगा। धर्म का तो पहला लक्षण ही अहिंसा को माना गया है और आज हिंसा का इतना जो व्यापक रूप हो गया है, वह तो यह सिद्ध करता है कि यह धर्म-ग्लानि का समय है जबकि भाई-भाई के ख़ून का प्यासा है और पड़ोसी-पड़ोसी को मारने पर तुला हुआ है और लोग दूसरे के धन को लूटकर अपने पास धन और सामान इकट्ठा करने के लिए तैयार हैं। ऐसी वारदातों से पता लगता है कि मनुष्य की मानसिक एवम् आध्यात्मिक स्थिति क्या है और वर्तमान समय धर्म किस दयनीय स्थिति तक पहुँच चुका है।

समाचार पत्रों में जो आँकड़े छपते रहे हैं, उस से मालूम होता है कि सन् १९४७ में भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात अब तक लगभग ५००० छोटे या बड़े मज़हबी दंगे हो चुके हैं! सन् १९४७ में देश का बटवारा भी धर्म-भेद के कारण से हुआ और उसके परिणामस्वरूप लाखों-करोड़ों व्यक्ति बेघर हुए और कितने ही निर्दयता पर्वक मारे गये। करोड़ों की सम्पत्ति नष्ट हुई। लाखों लोग निर्धनता की स्थिति में और बेरोज़गार हालत में शरणार्थी शिविर में प्रवेश पाने के पश्चात फिर से अपनी आजीविका का कुछ साधन ढूँढने में लगे। उस समय भी दो धर्म सम्प्रदायों में परस्पर वैर और हिंसा को लेकर जो रक्तपात हुआ, वह बहुत दर्दनाक था। विश्व के इतिहास में शायद अन्य किसी भी देश में आम जनता ने इतने थोड़े से समय में 'धर्म' के आधार पर कभी भी ऐसा अमानुषिकता का व्यवहार नहीं किया। एक ओर अल्लाह-हू-अकबर और दूसरी ओर हर-हर महादेव के नारे लगाते हुए एक-दूसरे के गले मिलने की बजाय जुनूनी लोगों ने जो ताण्डव नृत्य किया, वह काल विकराल को भी मात करने वाला था। कहने को तो एक धर्म सम्प्रदाय कहता है कि खुदा अर्रहमार्नुरहीम (रहमदिल) है और दूसरा धर्म सम्प्रदाय कहता है कि दया धर्म का मूल है परन्तु उस समय दोनों सम्प्रदायों ने जो उत्पात मचाया, वह लिखने से बाहर की चीज़ है। इतिहास के वे पन्ने जिनमें उस समय के वृत्तान्तों को थोड़ा-बहुत लिखा गया, वे मनुष्य की दर्दनाक दास्तान तथा उसके काले कारनामों का उल्लेख करते हैं। उसके बाद भी हालात बिगड़ते ही जा रहे हैं। ये इस देश के दुर्भाग्य हैं कि अब इस देश में कहीं-न-कहीं ऐसी वारदातें होती ही रहती हैं। एक किस्से को लोग अभी भूले ही नहीं होते कि दूसरी दुःख गाथा शुरू हो जाती है। जिस देश में इतने मन्दिर, इतने गुरुद्वारे, मस्जिदें, गिरजाघर, गुरु और धर्म प्रचारक हैं, उस देश की यह हालत है! इससे स्पष्ट है कि आज धर्म धर्म नहीं है और धार्मिक स्थानों से लोगों के मन को शान्ति नहीं मिलती। उनमें प्यार, सहिष्णुता और आत्म-नियन्त्रण की भावना पक्की नहीं होती बल्कि मनुष्य भेदभाव और बाह्यमुखता की ओर आगे बढ़ रहा है, क्या यह शर्म की बात नहीं है? अगर हरेक धर्म संस्था अथवा हरेक धर्म-गुरु अपने-अपने अनुगामियों को प्रेम, पवित्रता और शान्ति का प्रेक्टीकल पाठ पढ़ाये तो क्या यहाँ इन्सानों की ज़िन्दा होलिका जलाने के कुकृत्य हो सकते हैं? क्या यहाँ पुलिस और फ़ौज को बुलाने की आवश्यकता महसूस की जा सकती है? पुलिस और फ़ौज, कर्फ्यू और कन्ट्रोल, डंडा और गोली—इन सबकी आवश्यकता तो यह सिद्ध करती है कि नैतिकता और आत्म-अनुशासन, चरित्र और धर्म अब निष्प्राण हो चुके हैं। अब धर्म आत्मा की धारणा और दिव्यता की बजाय देह और दिखावे पर आधारित कर्म-कलाप ही का नाम है।

यह जो सब कुछ हुआ है, यह समय की चेतावनी है। समय यह बताता है कि अब रक्षक भी भक्षक बन चुके हैं, अब अधर्म ने धर्म का मुखौटा लगा रखा है। अब हर इन्सान मौका मिलने पर पराये धन से अमीर बनने के प्रलोभन का शिकार हो जाता है और कई इन्सान दूसरों का ख़ून बहाने को तैयार होते हैं, दूसरे स्वयं ख़ून नहीं बहाते लेकिन ख़ून बहाने वालों को उत्साहित करते हैं,

तीसरे खड़े-खड़े तमाशा देखते हैं, चौथे, जिनका काम निःसहाय की अत्याचारियों से रक्षा करना है, वे न केवल काठ की पुतली की तरह खड़े रहते हैं बल्कि लूटखसूट में अपने हिस्से की आशा लगाए होते हैं। ऐसे समय को देखकर अब भी यदि मनुष्य नहीं चौंका तो यह उसकी अपनी इच्छा है। समय के चिह्न स्पष्ट हैं। अपनी स्थिति को ठीक करने के संकेत भी स्पष्ट हैं और परमात्मा के अवतरण और दिव्य कर्म की आवश्यकता और प्रभु-वचन के क्रियान्वित होने के आसार भी स्पष्ट हैं।

—जगदीश

आज का मानव दानव कैसे बना ?

दानव और मानव की पहचान उसके कर्म और गुणों से होती है। जब मनुष्य विकारी, अत्याचारी और अधर्मी बन जाता है तो दानव कहलाता है। यदि कोई मनुष्य विद्वान् होते हुए भी विकारी और अत्याचारी है तो उसे रावण अथवा दानव ही कहेंगे। इस अनादि सृष्टि-चक्र के अनुसार सतयुग और त्रेता में मनुष्य देवता जैसे स्वभाव वाला होता है। द्वापर युग से लेकर वह गिरना शुरू होता है। वह आत्मा-निश्चय में स्थित न रहकर देह-अभिमानी बन जाता है और उत्तम दैवी धर्म तथा कर्म से पतित हो जाता है और मानव हो जाता है। कलियुग में वही मानव गिरते-गिरते दानव बन जाता है। कलियुग के अन्त में परमपिता परमात्मा शिव सहज ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर दानव को फिर से देवता बनाते हैं—इस प्रकार यह सृष्टि का अनादि चक्कर चलता रहता है।

भुज-कच्छ सेवाकेन्द्र उद्घाटन गुजरात ज़ोन की इंचार्ज ब्र० कु० सरला जी कर रही हैं।

हुबली में गलास हाऊस में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए प्रख्यात फिल्म निर्देशक भ्राता जी० बी० अय्यर जी।

मधुबन–एक अद्भुत तपस्थली

ब्र० कु० सूरजकुमार, आबू

वसुन्धरा का आँचल जब रक्त से सना है, राक्षसी प्रवृत्तियों ने जब चहूँ ओर हाहाकार मचाया है, जब धर्म व नैतिकता मैदान छोड़ कर भाग रहे हैं, जब मानवीय मर्यादाएँ कराह रही हैं, जब धरती माँ के सुपुत्र मायावी सम्प्रदाय को बलि चढ़ चुके हैं; ऐसे विकराल काल में, अचला के आँचल में उसका सहारा, उसके हिय-सम, पावन तप-स्थल, चारों ओर से मनमोहक श्रेणियों से घिरा हुआ मधुवन, दिव्य प्रकाश-रश्मियाँ प्रवाहित कर रहा है। जो कोई भी आज तक इस पावन धरा पर आया, चाहे वह किसी भी गुरु या धर्म का अनुयायी हो, चाहे वह नास्तिक हो या वैज्ञानिक—उसने मुक्त कंठ से कहा, "मधुबन धरती का स्वर्ग है।" यहाँ पर भौतिक वैभवों की चहल पहल नहीं, वरन मन को शान्त करने वाले सुन्दर वातावरण का आकर्षण है। यह मधुबन आबू पर्वत पर स्थित है तथा ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की गति-विधियों का मुख्यालय है। यहाँ पर वो सब कुछ है जो संसार में अन्यत्र कहीं नहीं है। अतः सत्य अर्थ में इसे सम्पूर्ण विश्व का महान आश्चर्य कहा जाएगा। प्रस्तुत चर्चा में हम आँखों देखी और अनुभव की गई उन अनुपम बातों का वर्णन करेंगे जो मधुवन के पावन आँचल में घटित होती हैं। ये न तो भूतकाल की बातें हैं और न भविष्य की कल्पनाएँ वरन् वर्तमान की घटनाएँ हैं और कोई भी इच्छुक यहाँ आकर या रहकर इनका दिव्यावलोकन कर सकता है। उनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—

यहाँ विश्व-परिवर्तन की योजनाएँ बनती हैं

विश्व परिवर्तन की अभिलाषा प्रत्येक मानस-पटल पर उभरती जा रही है। विश्व बदले, इसके मनुष्य बदलें, इसके शासक बदलें, यहाँ अमन चैन हो, परस्पर विश्वास हो, यहाँ न्याय व प्रेम हो, यहाँ समानता व सम्मान हो, चारों ओर खुशहाली हो, 'अभाव' शब्द यहाँ के कोष में न हो। ऐसे विश्व की कल्पना, जिसे स्वर्ग कहते हैं—प्रत्येक मानव करता है।

परन्तु ये कौन करेगा, यह कैसे होगा ? मानव शक्ति से तो मामूली समस्याएँ भी नहीं सुलझाई जा रही हैं। यहाँ परमात्मा की दिव्य-प्रेरणाओं व उनके अनुपम सन्देशों के आधार पर पवित्र व महान योगी आत्माएँ मिलकर विश्व-परिवर्तन की योजनाएँ बनाती हैं। उनकी योजनाएँ पूर्णतः अलौकिक हैं। इनका ध्येय एक-एक मनुष्य के मन को बदलना है। मन की विचारधारा को बदलना है। और मनोबल को श्रेष्ठ करना है। इनकी योजना सभाओं को देखकर स्पष्ट आभास होता है कि मानो ईश्वरीय दरबार लगा हो।

इसे स्वयं ब्रह्मा ने निर्मित्त किया है

मनुष्यों को यह बात शायद अजीब-सी लगे या वे कहें कि सब कुछ तो ब्रह्मा ही निर्माण करते हैं। परन्तु नहीं, विश्व को स्वर्ग बनाने के लिए स्वयं विश्व-पिता ने ही इसका निर्माण किया है। उसकी मार्ग-प्रदर्शना में ही इसका विकास हुआ है। लोग अनेक प्रकार से व्याख्या करते हैं कि भगवान ने सृष्टि ऐसे-ऐसे रची। परन्तु जिन नयनों ने प्रत्यक्ष देखा है कि प्रभु ने नई सृष्टि रचने से पूर्व मधुबन की रचना कैसे की—वे गौवरान्वित हैं।

यहाँ आत्माओं का परमात्मा से मिलन होता है

प्रभु दर्शनों की प्यासी आत्माएँ उसके क्षणिक दीदार के लिए वर्षों तक कठिन तपस्याएँ करती रही हैं। उन्हीं सब प्रभु-दर्शन-अभिलाषी आत्माओं

से मिलने के लिए प्रभु को स्वयं धरा पर आना पड़ा है। और उनका मिलन स्थान है—'मधुबन'। पूरे विश्व में अन्यत्र कहीं भी ऐसा स्थान नहीं—यह भ्रम नहीं बल्कि लाखों मनुष्यों का अनुभव है।

इस महान धरा पर लाखों आत्माएँ अपने प्यारे प्रियतम प्रभु से मिलकर अनेक दिव्य अनुभव कर चुकी हैं। प्रभु मिलन से स्वयं के भाग्य-सितारे को चमका चुकी हैं। परम पावन प्रभु की दृष्टि पाकर निहाल हो चुकी हैं···उनसे अमृत वचन सुनकर मनुष्य से देवत्व की ओर चल चुकी हैं···उनकी छवि अपने नयनों से देखकर सत्य को जान चुकी हैं···ऐसा श्रेष्ठ भाग्य जिन्हें मिला, वे उसे भूल नहीं सकतीं। उन्होंने प्रभु से मिलकर कई वरदान प्राप्त किये हैं···

ऐसा ये मिलन, जो कि मानव की कल्पनाओं से भी परे है। काश···मनुष्यों को आभास होता, वे अपने मन के पर्दे को उतार फेंकते···वे माया की काली चादर को फाड़ फकते···तो कल्पान्त में हो रहे इस प्रभु-मिलन के अनुपम रस का पान कर पाते और धन्य-धन्य हैं ऐसी वे लाखों आत्माएँ जो अपने मन की प्यास बुझा चुकी हैं।

यहाँ आत्माओं को परमात्मा के दिव्य स्वरूप के साक्षात्कार होते हैं। ये जादू नहीं, परन्तु उनकी जन्म-जन्म की तपस्या का फल है जो उन्हें इस पावन धरा पर प्राप्त होता है। तो सोचो भला क्या इस महान भूमि को विश्व का सर्वश्रेष्ठ चमत्कार न कहें।

यहाँ भगवान की मुरली बजती है

मन को अलौकिक रस से ओतप्रोत करके मायावी विश्व को भुला देने वाली प्रभु की मधुर ज्ञान-वीणा यहाँ प्रतिदिन झंकृत होती है। भक्तगण प्रभु की आवाज़ सुनने के अभिलाषी रहे, कोई अनहद नाद सुनने की साधना करते रहे, परन्तु इस पावन भूमि पर प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व ज्ञान-सूर्य उदय होकर अपनी ज्ञान-लालिमा से घण्टों तक सभी वत्सों को तरोताज़ा करते हैं। यहाँ ज्ञान के रत्न लुटाये जाते हैं और मनुष्यात्माएँ जन्म-जन्म के लिए अखुट खज़ानों से अपने भण्डार भर लेती हैं।

यहीं पर सम्पूर्ण सत्य का पर्दा खुलता है। अनेक विद्वान 'सत्य' पर अपने विचार प्रकट कर चुके हैं, परन्तु 'सत्य' रहस्य ही बना रहा। सत्य के अन्वेषकों को सान्त्वना नहीं मिली। अब सम्पूर्ण सत्य परमात्मा सत्यज्ञान सुना कर स्पष्ट करते हैं कि मनुष्य ने क्या-क्या भूलें कीं और मनुष्य पुस्तकीय ज्ञान के विस्तार में 'सत्य' को कहाँ-कहाँ भुला बैठा।

यहीं से सम्पूर्ण सत्य, प्रकाश के रूप में समस्त विश्व में फैलकर विश्व का अन्धकार दूर कर रहा है। यहीं से मनुष्य को मुक्ति व जीवन्मुक्ति के द्वार स्पष्ट नज़र आ रहे हैं। आज तक जो भी इस धरा पर आया, अपनी झोली ज्ञान-रत्नों से भर कर गया। यहाँ ज्ञान की गंगा बहती है जिसमें स्नान करके आत्माएँ पावन बनती हैं।

धन्य हैं वे पवित्र आत्माएँ जो भगवान से सम्मुख ज्ञान सुनती हैं···जिनके मन पर छाये अज्ञान के पर्दे उठ चुके हैं···जिन्हें अब सत्य की खोज नहीं है···जो अब एक-एक बूँद के प्यासे नहीं हैं···जिनकी भटकनें बन्द हो चुकी हैं···और जो निशि-दिन, ज्ञान-सागर की लहरों में खोकर, देह का भान भूलकर सतत अतीन्द्रिय सुखों में रमण करते हैं।

संसार में अनेक स्थान हैं जहाँ शास्त्रों का ज्ञान दिया जाता है, जहाँ विद्वान मनुष्य, मनुष्यों को पढ़ाते हैं। परन्तु यही वो मधुबन पावन धाम है, जहाँ परमात्मा आत्माओं को पढ़ाते हैं। यहाँ पुस्तकों का अध्ययन नहीं होता, यहाँ कोई गुरु विद्या नहीं देता, तो क्या इससे बड़ा आश्चर्य और कुछ हो सकता है। काश···इसका आभास सभी मनुष्यों को हो जाता, तो वे सत्य की खोज में इधर-उधर न भटकते!

यहाँ पवित्र आत्माएँ वास करती हैं

संसार में कोई भी स्थान ऐसा नहीं होगा जहाँ एक साथ इतनी पवित्र आत्माओं का वास हो।

किसी आश्रम या गुफा में, एक-दो-चार पवित्र आत्माओं का वास हो सकता है। परन्तु यहाँ एक साथ लगभग २०० पवित्र आत्माएँ वास करती हैं। इतना ही नहीं, यहाँ किसी भी विकार-युक्त मनुष्यात्मा को निवास करने का आदेश नहीं है। यह इतनी पावन भूमि है जहाँ एक अपवित्र संकल्प करना भी महापाप समझा जाता है। जहाँ तनिक भी कटु या अमर्यादित शब्द आसुरी लक्षण गिना जाता है। जहाँ के निवासी निशि-दिन अपने पवित्र कर्मों से अपने जन्म-जन्म के भाग्य की रेखा खींचते हैं।

यहाँ का संगठन व कार्य विधि भी अपने आप में अनुपम व अनुकरणीय है। यहाँ १०० से भी अधिक युवक एक साथ मिलकर रहते हैं यहाँ कोई कठोरता नहीं, कोई कानून का दबाव नहीं। यहाँ लोग ब्रह्मचर्य को अति सरलता व स्वाभाविकता से अपनाए हुए हैं—यह स्वयं ही अपने आप में सबसे बड़ा आश्चर्य है।

ये प्रभु की कर्म-भूमि है

वर्तमान समय मानव को मुक्ति व जीवन्मुक्ति का अधिकार देने के लिए अभिलाषी मानव को 'योग' सिखाने के लिए और जन्म-जन्म की भटकनों से थकी हुई आत्माओं को शरण देने के लिए परमात्मा ने इस दिव्य स्थान को अपनी कर्म-भूमि बनाया है। अनेक आत्माओं ने प्रभु के दिव्य कर्त्तव्यों को अपने नयनों से निहारा है। उनके दिव्य-अवतरण को ज्ञान-चक्षुओं से देखा है।

यहीं पर प्यार के सागर परमात्मा ने आत्माओं को प्यार बाँटा···अपने गले से लगाकर उनके दुख हरे···अपने कमल हस्तों से उनके आँसू पौंछे···वे भी धन्य हुए और देखने वाले भी मग्न हुए। सांसारिक प्यार तो सबने अनुभव किये, परन्तु प्रभु का प्यार कुछ पद्मापद्म भाग्यशाली रूहों ने ही देखा। प्रभु की इस दिव्य कर्म-भूमि पर आकर मनुष्य दिव्य कर्मों की प्रेरणा पाता है। प्रभु स्वयं यहीं पर श्रेष्ठ कर्म करना सिखाते हैं।

आजकल महान पुरुषों की कर्म-भूमि पर मेले लगते हैं। लोग श्रद्धा से वहाँ झुकते हैं। परन्तु वह दिन अति समीप है जब परमात्मा की इस कर्म भूमि के दर्शनों को लोग नंगे पैर दौड़े आयेंगे और उन आत्माओं के भाग्य के गीत गायेंगे जिन्होंने प्रभु के दिव्य कर्म देखे और जो उनके कर्मों में उनके साथी बने।

यहाँ मनोविकारों की आहुति पड़ती है

जन्म-जन्म लोग यज्ञों में आहुति डालते आये। परन्तु परमात्मा ने यह ऐसा अलौकिक रुद्र यज्ञ रचा जिसमें लोग मनोविकारों की आहुति डालते हैं। ये ऐसा पावन स्थान है, जहाँ पर आकर मनुष्य अपने अहं को परख पाता है,···अपने मनोविकारों की दुर्गन्ध उसे स्वयं ही आने लगती है,···अपने कटु वचन उसे स्वयं ही काटने लगते हैं,···अपने सिर पर रक्खे व्यर्थ के बोझ उसे भारी लगने लगते हैं और वह स्वेच्छा से उन्हें रुद्र यज्ञ में स्वाह कर देता है।

अनगिनत मनुष्य आज तक यहाँ आकर अपनी बुराइयों का दान कर चुके हैं। कितनों ने शराब स्वाह की, कितनों ने धूम्रपान व व्यसन, कितनों ने क्रोध छोड़ा और कितनों ने अहंकार के महाभूत से स्वयं को मुक्त किया, और लाखों लोग काम-महा-शत्रु से मुक्ति पाकर यहाँ से 'पवित्र भव' का वरदान पाकर लौटे हैं।

यहाँ आकर भौतिकता में बह रहे विदेशी लोग भी पावनता का पथ अपना लेते हैं। मांसाहारी दुनिया में पलने वाले भी शुद्ध शाकाहारी बन जाते हैं। बीड़ी सिग्रेट के धुएँ से उन्हें ही बदबू आने लगती है। अर्थात् यों कहें कि यहाँ आकर मनुष्य अपने सत्य का साक्षात्कार कर लेता है।

मधुबन तपोभूमि है

शायद लोगों को आश्चर्य लगे, परन्तु है आश्चर्य जनक सत्य। यहाँ हज़ारों लोग एक साथ बैठकर एकाग्र मन से योगाभ्यास करते हैं। अनेक महा-

नात्माओं ने भी यह सत्य अपने नयनों से निहारा है। जबकि अनेक सन्यासियों के ही शब्दों में— "अधिकतर सन्यासियों के आश्रम साधना रहित हैं या साधना नाम-मात्र रह गई है।"

यह वो तपोभूमि है जहाँ प्रत्येक साधक को निरन्तर योग-युक्त रहने का ध्येय है। यहाँ सामूहिक मौन रहता है। ये वो तपस्थली है जहाँ भगवान सम्मुख बैठकर अपनी पावन दृष्टि देकर आत्माओं के मन को एकाग्र कर देते हैं···जहाँ कई आत्माएँ घन्टों एकाग्रचित्त होकर परमात्मा के सर्व गुणों व शक्तियों का श्रेष्ठतम अनुभव करती हैं।

प्रात: ४ बजे से जब सभी योगाभ्यासी एक साथ बैठकर योग-मग्न होते हैं, तो ऐसा लगता है मानो यहाँ से चारों ओर पावनता का प्रवाह प्रवाहित हो रहा है जो कि समस्त विश्व से विकारों के कीटाणुओं को भस्म करेगा। यहाँ दिन में कई बार व रात्री को योगाभ्यास होता है।

अनेक बार यहाँ २४ घण्टों योग-तपस्या चलती है। कलियुग के इस अन्त काल में ऐसी तपस्या अन्यत्र नहीं देखी जा सकती। ऐसा है ये अद्‌भुत स्थान मधुबन जहाँ का प्रत्येक दृश्य मानव-मन को परमात्मा की ओर आकर्षित करता है।

यहाँ से सम्पूर्ण विश्व में शान्ति के प्रकम्पन भेजे जाते हैं

यहाँ मनुष्यों के चेहरों पर छाई शान्ति, खुशी व दिव्य मुस्कान मनुष्य के मन के तनाव को नष्ट कर देती है। यहाँ प्रवेश करते ही गहन शान्ति का आभास होने लगता है। मनुष्य का मन यहाँ स्वत: ही शान्त हो जाता है। यहाँ मनुष्य को स्वत: ही उसकी समस्याओं का हल मिल जाता है।

प्रात: व सायं के शान्त वातावरण में अनेक शान्त चित्त आत्माएँ शान्ति के सागर परमात्मा से योग-युक्त होकर समस्त विश्व में शान्ति की तरंगें फैलाते हैं। शान्ति की शक्ति से दूर बैठे हुए मनुष्यों को शान्ति देते हैं। यह दृश्य अति मनमोहक होता है।

इस प्रकार इस पावन भूमि से विश्व में श्रेष्ठ प्रेरणाएँ पहुँचाई जा रही हैं। यहाँ वे महान पुरुष निवास करते हैं जिनका सम्बन्ध भगवान से है। जिनके जीवन से त्याग व तपस्या की सुगन्ध आती है। जो विश्व परिवर्तन की सेवा में सर्वस्व स्वाह कर चुके हैं। जो महान त्यागी भी हैं व महान भाग्यशाली भी···

ऐसी लाइट-हाउस सम इस मधुबन भूमि की महिमा का क्या वर्णन करें। इसकी महिमा असीमित है···अवर्णनीय है, यह अनुभव करने योग्य है। यदि किसी को हमारी ये बातें अतिश्योक्ति या स्व प्रशंसा लगे तो वे यहाँ आकर इस सत्य को देख सकते हैं। हमारा ध्येय तो मात्र, सत्य को उजागर करना है। कोई भी यहाँ आकर यह निर्विवाद रूप से स्वीकार करेगा कि सच ही ये मधुबन, मधु से भी मृदु श्रेष्ठ तपस्थली है और उसके मुख से यही निकलेगा कि ये "भगवान का घर है"···"यह मेरा घर है"···"यह धरती का स्वर्ग है" और वास्तव में "Wonder of the world" है। □

अब युग परिवर्तन होगा (शेष पृष्ठ ११ का)

जब उपरोक्त प्रकार की गलत मान्यताओं पर आधारित मानव जीवन या सामाजिक उत्थान होता हैं—तभी मनुष्य दु:खी होता है और ऐसे ही समय परमात्मा का अवतरण होता है। और वे मनुष्यों के ज्ञान को सही कर मार्गदर्शन देते हैं और सबको सुखी बनाते हैं। उपरोक्त बातें मुझे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सम्पर्क में आने पर ज्ञात हुईं। और यह भी ज्ञात हुआ कि किस प्रकार आज के इस विकराल समय में भी सुख-शान्ति पवित्रता, परमात्मा से योग लगाकर तथा ईश्वरीय शिक्षायें अपने जीवन में धारण कर प्राप्त की जा सकती है।

○

अब युग परिवर्तन होगा

ब्र० कु० ओमप्रकाश मसुरहा, बांदा

पुराणों में वर्णित है कि कलियुग--४,३२,००० वर्ष, द्वापर--३,२४,००० वर्ष, त्रेता--२,१६००० वर्ष और सतयुग १,०८,००० वर्ष का होता है। कलियुग तो अभी सिर्फ ५००० वर्ष का बच्चा है, महाविनाश को अभी तो ४,२७,००० वर्ष बाकी पड़े हैं। तो आइये, आज की निम्न परिस्थितियों में उपरोक्त तथ्यों की जांच करें ! सत्य क्या है, असत्य क्या है ?

भूमि और आबादी

यह हमारी पृथ्वी जो है वह मात्र १२,७५० कि० मी० व्यास की है। उसकी परिक्रमा की जाये तो वह ४०,००० कि० मी० है। पृथ्वी का सम्पूर्ण क्षेत्रफल ५१,००,०४,००० (५१ करोड़, ४ हज़ार) वर्ग कि० मी० है और इसका वज़न ५९८३ × $१०^{१८}$ टन है।

सन् १६०० ई० से ही यदि हम सारे संसार की आबादी का विचार करें, तो इस समय वह मात्र ५० करोड़ थी, यही आबादी १०० वर्षों के बाद सन् १७०० ई० में ७३ करोड़ हो गई, सन् १८०० ई० में १२५ करोड़, सन् १९०० ई० में २०० करोड़, और इधर २०वीं शताब्दी में मात्र ७१ वर्षों के बाद ३७० करोड़ और इसके ११ वर्षों के बाद ४७० करोड़ और वर्तमान १९८४ में तो ४८० करोड़ हो चुकी है। कहते हैं कि जिस गति से आबादी आज बढ़ रही है, तो प्रति दिन संसार में पैदा होने वाले व मरने वालों के बावजूद भी करीब २.५ लाख व्यक्ति बढ़ जाते हैं। और उसी गति से आबादी यदि बढ़ती रही तो सन् २००० ई० तक पूरे विश्व की आबादी ७०० करोड़ हो जाने की आशा है।

आबादी का विचार करने वाले विशेषज्ञों की राय है कि प्रत्येक ३५ वर्षों के बाद आबादी दो गुनी हो जाती है। उदाहरण स्वरूप भारत की आबादी सन् १९४७ ई० में मात्र ३३ करोड़ थी, जो अब बढ़कर ७२ करोड़ हो गई है यानि कि दो गुनी से भी अधिक।

उपरोक्त दिये तथ्यों से हम जानते हैं कि सम्पूर्ण पृथ्वी का क्षेत्रफल मात्र ५१ करोड़ ४ हजार वर्ग कि० मी० है। और उस पर हम विस्तृत विचार करें, तो सम्पूर्ण क्षेत्रफल के ७१-७२% भाग में समुद्र है कुल २८% क्षेत्र में पृथ्वी है और मजा यह कि इसमें से भी १७% में नदी, नाले, खाई, पहाड़ और मरुस्थल है, ५% क्षेत्र में बर्फ जमी हुई है। इस प्रकार हम देखते हैं कि ९४% पृथ्वी का हिस्सा तो मनुष्य जाति के रहने योग्य ही नहीं हैं और हम दुनिया के ४८० करोड़ लोग पृथ्वी की सम्पूर्ण भूमि के केवल ६% यानी करीब ३ करोड़ वर्ग कि० मी० भूमि का ही उपयोग कर पाते हैं। उसी भूमि में सभी के मकान-दुकान, कल-कारखाने, खेत-खलिहान, बाग-बगीचे, रेलपथ, बस अड्डे, स्कूल-अस्पताल आदि हैं। कहने का आशय है कि जिस भूमि का उपयोग सन् १६०० ई० में करीब १६ व्यक्ति कर रहे थे, उसी प्रति वर्ग कि० भूमि में अब १६० लोगों की व्यवस्था है। उसी भूमि में उनके समस्त उपभोग की वस्तुओं का इन्तजाम होना चाहिये। और यही कारण है कि आज गाँव हो या शहर भूमि का मूल्य बेतहाशा बढ़ रहा है।

बढ़ती आबादी और विश्व का भविष्य

अब जिस गति से आबादी बढ़ रही है, उससे अनुमान है कि सन् २००० ई० तक यह ७०० करोड़ हो जायेगी। चूंकि आबादी हर ३५ वर्ष में दो गुनी हो जाती है, इसके माने यह हुआ कि सन् २०३५ में यही विश्व की आबादी १४०० करोड़,

सन् २०७० में २८०० करोड़, सन् २१०५ में ५६०० करोड़ ! यदि इसी गति से आबादी बढ़ती जाये तो आप जानकर ताज्जुब करेंगे कि सन् २९०० में इतनी आबादी हो जायेगी कि पृथ्वी के प्रत्येक वर्ग फुट जगह में १००० आदमियों को रहना पड़ेगा।

आगे विचार करने पर हम देखेंगे कि सन् ४००० ई० तक तो विश्व की आबादी इतनी हो जायेगी कि सम्पूर्ण मनुष्य जाति का वजन पृथ्वी के कुल वजन के बराबर होगा। चूकि आप जानते हैं कि मनुष्य का शरीर का निर्माण तो पंच महा-तत्वों क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर से हुआ है, इस प्रकार यदि आबादी की ऐसी स्थिति पैदा हो जाये तो पृथ्वी तो समाप्त हो चुकी होगी और पृथ्वी ही मनुष्यमय हो जायेगी। यानी हम सब कीड़े-मकोड़ों की तरह एक-दूसरे से चिपके कुल-बुला रहे होंगे।

तो विचार करें यह पृथ्वी और इस पर मनुष्य जीवन आगे ४,२७,००० वर्ष किस प्रकार चलेगा। तो ऐसी स्थिति से कैसे उबरेंगे यह विचारणीय विषय है।

आणविक हथियारों का जखीरा

अब हम यदि पिछले १ हजार वर्षों का इति-हास देखें, तो सारे संसार में छुरी, कांटा, बल्लम, तीर, तलवार और लाठी इत्यादि परम्परागत औज़ार ही थे। इधर पिछली तीन शताब्दियों से गोली-पिस्तौलें-बन्दूकें बन गईं तो मारक दूरी और शक्ति में परिवर्तन हुआ। तोपों का प्रयोग भी प्रारम्भ हो गया, जो बड़े-बड़े किलों-मकानों की दीवारों को तोड़ने में सक्षम हुआ। पिछली शताब्दि के अब में डाइनामाइट का आविष्कार हुआ, तो उससे मानव की विध्वन्सक शक्ति और बढ़ गई। और अब २०वीं शताब्दी में तो एटमबम-हाईड्रोजन बम-रसायनिक बम, जैविक बम इत्यादि-इत्यादि का निर्माण हो चुका है।

उदाहरण स्वरूप हम जानते हैं कि जब हिरो-शिमा और नागासाकी नामक जापान देश के नगरों का क्या हाल हुआ जब कि ६ अगस्त सन् १९४५ और ८ अगस्त १९४५ ई० को अमरीका ने बेबी बमों का प्रयोग किया था। ज्ञात हो कि ये बेबी बम मात्र २० इंच लम्बे व ८ इंच व्यास के थे। तो इन बमों ने इतना विनाश किया कि इन नगरों में रहने वाले ७०,००० लोग तो तत्काल मर गये, ८०,००० लोग घायल हो गये और तीन लाख बीस हजार लोग विकलांग यानी अन्धे, काने, कुबड़े, लूले, लंगड़े हो गये। जिनमें से ३९ वर्ष बीतने के बाद भी ६०,००० विकलांग अभी जिन्दा है, जो इस वीभत्स घटना के गवाह हैं। और तो और इनके व उस इलाकों के बाशिन्दों के जो बच्चे पैदा हो रहे हैं वे भी विकलांग ! जमीन उजाड़ एवं अनउपजाऊ हो चुकी है।

तो उपरोक्त हाल तो तब हुआ जब अमेरिका ने जापान के विरुद्ध मात्र बेबी बमों का ही प्रयोग किया था, किन्तु अब तो अमेरिका, रूस, फ्रांस, ब्रिटेन और चीन आदि देशों ने इतने शक्तिशाली बमों का निर्माण कर लिया है, जो उन बेबी बमों की अपेक्षा ४-४ हजार गुना शक्तिशाली हैं। जहाँ किसी समय मनुष्य के लाठी, तलवारों आदि शस्त्रों का प्रयोग कुछ फीट दूरी तक ही किया जा सकता था वहाँ अब इन बमों को ६५०० कि० मी० से लेकर १३-१३ हजार कि० मी० दूर तक फेंका जा सकता है। ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि यह दूरी सम्पूर्ण पृथ्वी के परिधि की १/३ के करीब है। यानी इन बमों द्वारा पृथ्वी के एक तिहाई दूरी तक के निशानों तक मार की जा सकती है। और प्रयोग द्वारा यह पाया गया कि इनके निशाने भी सही बैठते हैं।

इनकी शक्ति द्वारा उत्पन्न विनाश का फैलाव इतना है कि एक-एक बम १३-१३ लाख वर्ग कि० मी० भूमि तक अपना असर डालेगा। इसका अन्दाज़ा आप इससे समझ सकते हैं कि भारत की भूमि है ३२,८२,४४२ वर्ग कि० मी०। यानी मात्र

३ बमों द्वारा ही सम्पूर्ण भारत का विनाश संभव है, जब इस प्रकार के करीब ६०,००० आणविक शस्त्र, इन आणविक शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों के पास बने रक्खे हुए हैं और इन्हें पृथ्वी के विभिन्न कोनों में अड्डे बनाकर रक्खा हुआ है जो एक दूसरे का निशाना लगाये बैठे हैं।

विश्व के अभी तक प्राकृतिक विद्वानों में नोबुल पुरुस्कार प्राप्त १५८ वैज्ञानिकों में से १११ वैज्ञानिकों का कथन है कि विश्व में आज जो विनाश शक्ति मौजूद है, उससे पृथ्वी को सैकड़ों बार मनुष्य विहीन किया जा सकता है।

चिन्तनीय विषय

इस विषय पर विचार करने से रोंगटे खड़े करने वाले तथ्य सामने आ रहे हैं। वैज्ञानिकों का कथन है कि यदि मात्र एक पनडुब्बी (सबमेरिन) में लदे आणविक-अस्त्रों-शस्त्रों का प्रयोग हो गया तो यूरोप, अमेरिका और एशिया पर इतने घने-जहरीले काले बादल छा जायेंगे कि सूर्य की रोशनी पृथ्वी पर कम से कम १ वर्ष तक प्रवेश नहीं कर सकेगी। इन तथ्यों को रूस व अमरीका के वैज्ञानिकों ने माडल बनाकर प्रयोगशाला में प्रयोग कर सत्य पाया है और दोनों ने जो परिणाम निकाले हैं वे उपरोक्त हैं। कहते हैं इसके परिणाम स्वरूप पृथ्वी पर हिम युग आ जायेगा और अन्ततः भूख-प्यास और बीमारी से परेशान मानव तड़प-तड़प कर प्राण दे देगा और पृथ्वी प्राणी विहीन हो जायेगी।

विश्व परिवर्तन का समय

क्या सृष्टि का नाटक इतना क्रूर है ? मनुष्य के चारित्रिक, नैतिक, आध्यात्मिक पतन की क्या इससे भी अधिक अधोगति होनी है ? आखिर विनाश तो निश्चित ही दिख रहा है। वास्तविक रूप से देखा जाये तो हम प्राणिमात्र उधार मांगे गये समय पर जिन्दा हैं। जब प्रत्येक व्यक्ति काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार व आलस्य रूपी अन्तःकरण में निवास करने वाले दुश्मनों की गिरफ्त में है, तो मनुष्य विनाश तो अपना करेगा ही, उसकी दुर्दशा व अधोगति तो होगा ही।

शिव भगवान उवाच—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिभवति भारत,
अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदाद्मानम् स्रजाम्यहम् !

संसार के इतिहास चक्र में ऐसी कठिन परिस्थितियां कभी नहीं थीं, जैसी आज हैं—किन्तु आज का मानव कुंभकर्णी निद्रा में सोया पड़ा है, वह सोचता है कि विनाश को तो अभी लाखों वर्ष पड़े हैं—वह यह भी गलत सोचता है—कि यदि हम शान्ति चाहते हैं तो हमें युद्ध के लिये तैयार रहना चाहिये।

- ☐ कि जीवन एक संघर्ष है, और इसमें शक्तिशाली ही जिन्दा रह सकता है।
- ☐ कि भूत में कभी भी ऐसा समय नहीं रहा जब कि लड़ाइयाँ न हुई हों अथवा कोई दुश्मन न रहा हो।
- ☐ कि लिखित इतिहास के अलावा धार्मिक ग्रन्थों, पुराणों इत्यादि में वर्णित सब कुछ काल्पनिक है और ऐसा समय कभी नहीं रहा।
- ☐ कि मनुष्य के पूर्वज बन्दर थे और वे पशु-पक्षियों व कन्दमूल फल इत्यादि खाकर ही जीवन व्यतीत करते थे।
- ☐ कि मनुष्य में मस्तिष्क व शरीर के अलावा आत्मा नामक चेतन सत्ता नहीं है।
- ☐ कि मनुष्य की मृत्यु के बाद कोई जीवन नहीं है।
- ☐ कि कुछ भी अच्छा या बुरा नहीं है—केवल विचार अथवा सामाजिक चिन्तन ही उसे अच्छा-बुरा बनाता है।
- ☐ कि धन, राजनीतिक शक्ति व ऊंच पद ही सबसे अधिक मूल्यवान है और चारित्रिक व आध्यात्मिक सिद्धान्त का महत्व कम है अथवा इनका कोई महत्व ही नहीं है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

वर्तमान युग और वैवाहिक जीवन

ब्र० कु० शकुन्तला कानोडिया

स्त्री और पुरुष मानव सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ प्राणी हैं। सृष्टि के आदि से ही स्त्री और पुरुष दोनों ने मिलजुल कर ही पारिवारिक जीवन को चलाया। सीता-राम, राधा-कृष्ण आदि हमारे पूर्वज देवी-देवताओं ने भी पवित्र दाम्पत्य सूत्र में बन्धना स्वीकार किया और पवित्र गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया। उनका यह मिलन दो आत्माओं का पवित्र मिलन था।

पर आज के युग की शादी को हम बरबादी का पर्याय कहें तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। आज का विवाह काम विकार की सम्पूर्ण छूट के लिए मात्र एक प्रमाण-पत्र बनकर रह गया है।

आज जबकि सृष्टि रूपी वृक्ष की जड़ें पूर्ण रूप से खोखली हो चुकी हैं तो अनेक प्रकार के समाज-सेवी इसकी देख-रेख में लगे हुए हैं। कोई पत्तों को पानी दे रहा है तो कोई बेचारा गर्मी-सर्दी से इसकी रक्षा कर रहा है। पर आश्चर्य है किसी भी बुद्धि-जीवी का ध्यान विकारों की दीमक से खोखली हुई जड़ों की तरफ क्यों नहीं जाता ? सिर्फ पत्तों को सींचने मात्र से यह सृष्टि-वृक्ष कितने दिन और खड़ा रह सकेगा ?

वर्तमान समय की मांग के अनुसार रेडियो टी० वी० आदि सभी प्रचार प्रसार के साधन बस एक यही रट लगाए हुए हैं कि शादी दो आत्माओं का पवित्र मिलन है, इसे दहेज से कलंकित न होने दें। आश्चर्य है ! वह शादी दहेज से तो कलंकित हो जाती है पर जिस काम विकार के कारण यह लोक और परलोक दोनों ही पूर्ण रूप से नष्ट हो जाते हैं उससे यह कलंकित नहीं होती ? वे या तो आत्मा को ही नहीं जानते कि यह किस जानवर का नाम है या फिर वे पवित्रता की परिभाषा का गलत अर्थ लगाते हैं। पवित्र मिलन का अर्थ तो यही होता है कि काम-विकार व अन्य विकारों से मनसा, वाचा, कर्मणा मुक्त होकर मिलना। फिर आज दुनिया का कोई भी दम्पत्ति इससे मुक्त रह सकता हो ऐसा उदाहरण मिलना मुश्किल ही नहीं बल्कि असम्भव है।

प्रश्न यह उठता है कि क्या विवाहित जीवन सृष्टि के आदि से ही विकारी रहा है ? क्या आप कभी सोच सकते हैं कि सीता-राम, राधा-कृष्ण आदि हमारे पूर्वज जोड़े भी कभी काम विकार की दलदल में फँसे होंगे ? कदापि नहीं, कदापि नहीं। दो आत्माओं के पवित्र मिलन वाली बात तो केवल इन देवताओं पर ही चरितार्थ हो सकती है। आज के युग का विवाह पवित्र मिलन नहीं वल्कि अपवित्र मिलन है।

आज उन्हीं राम-कृष्ण जैसे देवताओं की धरती पर जन्म लेने वाले दो प्रेमी अपने प्रेम की पूर्णता के लिए काम को अपनाते हैं। काम विकार ही उनकी दृष्टि में प्रेम की सम्पूर्ण निशानी है। उनकी नज़रों में काम विकार के विना प्रेम अधूरा है। फिर भी आज के विवाह को 'पवित्र मिलन' की संज्ञा दी जाती है।

विवाहित जीवन सुखी न होने का मूल कारण यही है कि पति-पत्नी जीवन-पर्यन्त एक-दूसरे को काम का काँटा चुभाते रहते हैं। घर फूँककर तमाशा देखने वाली उक्ति आज के दम्पत्तियों पर खरी उतरती है। गरीबी, मंहगाई, बेरोजगारी की सल-वटों भरा उदासीन चेहरा लिए आज का विवाहित वर्ग गली, मुहल्लों व सड़कों पर निरुद्देश्य सा घूम रहा है। इसके विपरीत इन सब समस्याओं की उत्पत्ति का स्रोत किसे मानता है ? अपने देश की

सरकार को अपने ही कुकर्मों से पैदा की हुई समस्याओं को थमाना चाहता है। और जब सरकार भी इन समस्याओं की जिम्मेवारी सम्भालती-सम्भालती थक जाती है तो फिर बारी आती है भगवान को कोसने की।

वास्तविकता यह है कि आज का वैवाहिक जीवन इतना नारकीय हो गया है कि प्रत्येक स्त्री या पुरुष के चेहरे पर अभावों, उदासी और निराशा के भाव साफ झलक रहे हैं। अगर कोई भी स्त्री या पुरुष अपने बचपन के बीते हुए मधुर पलों की तुलना वर्तमान विवाहित जीवन से करता है तो चाहे उसने बचपन में रूखी-सूखी खाकर ठण्डा पानी ही क्यों न पिया हो और विवाह के बाद कितना ही धन पानी की तरह क्यों न बहाया हो पर जब वे एक उड़ती नज़र अपने बचपन पर फेंकते हैं तो बरबस ही उनके मुख से निकल पड़ता है, "अहा ! जीवन तो वही था !" विवाहित जीवन जीना आज के युग में चाँदी के प्याले में ज़हर पीना है। क्या चान्दी के प्याले में ज़हर डालने से वो ज़हर अमृत बन जाता है ? नहीं। पर आज के इंसान को चान्दी की चकाचौंध में उसमें अन्दर रखा हुआ ज़हर नजर कहाँ आता है ? इसका अहसास तब होता है जब जिम्मेदारियों और अभावों का बढ़ता हुआ बोझ उनकी कमर को झुकने के लिए विवश कर देता है। उनका मन चाहता है कि हम वापस उसी जिन्दगी में लौट जाएँ। परन्तु तब तक काम का भूत उनकी रग-रग में समा चुका होता है और इसे अमृत समझकर जीवन-पर्यन्त मुँह से लगाए रहते हैं।

न जाने कितनी ही कन्याएँ इस अपवित्र घिनौने बन्धन और बच्चों की जिम्मेदारी को बेसुरे राग की तरह अलापने को मजबूर होती हैं। घर-गृहस्थी के खर्चों की ज़िम्मेदारी का बोझ उन्हें यह सब भूल जाने के लिए विवश कर देता है कि कभी उन्होंने देश के समक्ष कोई उदाहरण पेश करने का सुनहरा स्वप्न लिया था। पर वे इसी घिसी-पिटी जिन्दगी में घिसटने को मजबूर हो जाती हैं। अपनी जिन्दगी को परिस्थितियों के अनुसार किसी तरह ढाल कर मन को सन्तुष्टि देने की कोशिश करती हैं। कभी-कभी उनके अन्तर्मन की खिड़की से वह 'सुनहरा स्वप्न' झाँकता भी है तो वर्तमान को तुलनात्मक ढंग से श्रेष्ठतम घोषित करके अपनी अन्तर्आत्मा की आवाज़ को दबाने की नाकाम कोशिशें करती हैं।

काम विकार की अग्नि में झुलसा हुआ चेहरा शिकंजे में दिये हुए किसी नीम्बू जैसा हो जाता है। २५ वर्ष की उमर पार करते ही झुर्रियाँ चेहरे पर अपना आसन जमा लेती हैं। विवाह के दो या तीन वर्ष बाद ही मानसिक व शारीरिक कमजोरी युवक-युवतियों को आ घेरती हैं। फिर भी अफसोस है कि आज का मानव इस मीठे ज़हर को पीता ही जा रहा है। परिणाम स्वरूप वह चारों ओर से समस्याओं से घिर गया है। इन सभी समस्याओं से पीछा छुड़ाने का रास्ता उसे कहीं नज़र नहीं आ रहा है। यदि आज का मानव खुदा को कोसने और उसे बुरा-भला कहने की बजाए शान्ति से खुद के अन्तर्मन में झाँककर देखे कि कहीं मैं तो गलती पर नहीं हूँ—तो जरूर इन समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

○

प्रेम की नींव पर (पृष्ठ २४ का शेष)

रखा। समता और समभाव की सीट पर बिठाकर आत्मिक वृति और भाई-भाई की दृष्टि का पाठ पक्का कराया।

आज परमात्मा पिता के प्रेम का ही यह फल है कि लाखों-लाख, नर-नारी अपना सर्वस्व देकर राम-राज्य की स्थापना के कार्य में लगते जा रहे हैं। परमात्मा ने प्रेम की नींव पर ही स्थापना की यह विशाल इमारत खड़ी की है। स्थापना पूरी होते ही पुनः दुनिया प्रेममय हो जायेगी, सतयुग आ जायेगा। मानव देव-पद प्राप्त कर लेंगे।

□

सुस्ती-बुरी बला

ले०-ब्र० कु० चक्रधारी, दिल्ली

प्यारे बच्चो, यह तो तुम जानते ही हो कि गुणवान मनुष्य कितना जल्दी अपने जीवन में उन्नति कर लेता है, आगे बढ़ जाता है और समृद्ध हो जाता है और उसी के विपरीत अवगुणी मनुष्य कभी भी तरक्की नहीं कर पाता; तरक्की तो क्या वह और ही नीचे गिरता जाता है। वह सर्व का प्रिय भी नहीं बन पाता। अवगुणों में एक बहुत बड़ा अवगुण है—सुस्ती अथवा आलस्य। आध्यात्मिक भाषा में आलस्य को छठा विकार कहा गया है। यह आलस्य अथवा सुस्ती रूपी अवगुण मानव का बहुत बड़ा दुश्मन है अथवा उसके मार्ग में एक बहुत बड़ी बाधा है जो उसे आगे बढ़ने नहीं देती। जिस देश के नागरिक सुस्त और आलसी होते हैं, वह देश कभी भी समृद्धिशाली (Prosprous) नहीं हो सकता। आज हम तुम्हें इसी बात को लेकर एक कहानी सुनाते हैं कि सुस्त व्यक्तियों के सोचने का क्या तरीका होता है।

एक बार की बात है किसी शहर के रेलवे स्टेशन के बाहर एक व्यक्ति कुछ फल एक टोकरे में रखकर एक छायादार वृक्ष के नीचे बैठा हुआ था। वृक्ष के तने के साथ उसने टेक लगाई हुई थी और बठा-बठा वह ऊँघ-सा रहा था। बीच-बीच में आँख खोलकर देख लेता और फिर सो जाता। सुबह से लेकर उसने बहुत कम ही फल अभी तक बेचे थे। सड़क पर बहुत-से पथिक आ जा रहे थे। उन्हीं में से एक सज्जन पुरुष की नज़र उस फल वाले व्यक्ति पर पड़ी। कुछ देर तो वह उसे एकटक देखता रहा कि देखें यह व्यक्ति जागता है या नहीं। उसे बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि अभी प्रातः के ११.०० बज चुके हैं और यह व्यक्ति कैसे मज़े से आराम की नींद सो रहा है, जबकि यह इसका कमाई का समय है। जब कुछ समय बीत गया तो वह सज्जन पुरुष उस फल वाले की ओर बढ़ा।

उसके नज़दीक पहुँचकर उसने कहा—"ए, फल वाले; ए फल वाले, ये केले कैसे दिये ?"

फल वाले ने हड़बड़ाकर आँखें खोल दीं और बोला—'क्या कहा बाबूजी ?'

सज्जन पुरुष—'ये केले कैसे दिये ?'

फल वाला—'तीन रुपये दर्जन'

सज्जन पुरुष—'एक दर्जन केले दे दो।' वे आगे बोले—'देखो, तुम फलों का टोकरा लेकर बैठे हो और इस वक्त कमाई करने के बजाय ऊँघ रहे हो। अरे भया, यह कमाई का वक्त है। आँखें खोलकर बैठो, आते-जाते राहगीरों को बुलाओ। कुछ मेहनत करो तभी तो जीवन में कुछ कर पाओगे।'

फल वाला, जो पहले चुपचाप उस सज्जन पुरुष की बात सुन रहा था, एकदम बोल उठा—'मेहनत करूँगा तो क्या होगा ?'

सज्जन पुरुष—'तुम्हारे ये सारे केले शीघ्र ही बिक जायेंगे।'

फल वाला—'केले शीघ्र बिक जाने से क्या होगा ?'

सज्जन पुरुष—'फिर तुम इससे अधिक केले खरीदकर एक दिन में बेच सकोगे ?"

फल वाला—'अच्छा, फिर क्या होगा ?'

सज्जन पुरुष—'तुम्हारे पास धन अधिक हो जायेगा।'

फल वाला—'फिर क्या होगा ?'

सज्जन पुरुष—'फिर तुम एक टोकरा रखने की बजाय एक दुकान के मालिक हो जाओगे।'

फल वाला—'मेरी दुकान बन जाने से क्या होगा ?'

सज्जन पुरुष—'दुकान पर अधिक किस्म का फल होगा और अधिक मात्रा में होगा, तो तुम्हारे पास ग्राहक और भी ज्यादा आयेंगे।'

फल वाला—'अच्छा, फिर क्या होगा ?'

सज्जन पुरुष—'फिर तुम और अधिक धनवान हो जाओगे।'

फल वाला—'धनवान बनने से क्या होगा ?'

सज्जन पुरुष—'फिर तुम्हारा एक बंगला होगा। नौकर चाकर होंगे।'

फल वाला—'फिर क्या होगा ?'

सज्जन पुरुष—'फिर तुम आराम चैन की ज़िन्दगी जिओगे और सुख से सोओगे।'

फल वाला खिलखिलाकर हंस दिया और उस सज्जन पुरुष की ओर ऐसे देखने लगा मानो उन्होंने कोई चुटकुला सुना दिया है।

सज्जन पुरुष ने पूछा—'क्यों, हंस क्यों रहे हो ? क्या मैंने कुछ ग़लत कह दिया है ?'

फल वाला—'अरे बाबूजी, वही तो मैं कर रहा था। इतनी लम्बी-चौड़ी राम कहानी के बाद तो वही आई कि मैं आराम की नींद सोऊँगा। बाबूजी, वही नींद तो मैं अभी ले रहा था फिर इतना सब करने की मुझे क्या ज़रूरत है ! वाह बाबूजी वाह !'

सज्जन पुरुष अवाक्-से उसकी बात सुनते रह गये और धीरे-धीरे मन-ही-मन यही सोचते हुए आगे बढ़ गये कि वाह तकदीर वाह ! सुस्ती भी क्या रंग दिखाती है !

तो देखा बच्चो, यह सुस्ती कितनी बुरा बला है ! इस पुरुषोत्तम संगम युग पर भी शिव बाबा के बच्चों में कुछ बच्चे ऐसे ही होते हैं जो यह सोच लेते हैं कि 'सतयुग में जाकर उच्च पद की प्राप्ति कर आराम से जीवन व्यतीत करेंगे', यह तो भविष्य की बातें हैं। उसके लिए कौन इतनी मेहनत करे हम तो यहीं आराम का जीवन जी रहे हैं।' ऐसा सोचकर वे कभी भी श्रेष्ठ पुरुषार्थ नहीं कर पाते और पीछे के पीछे ही रह जाते हैं।

शिव परमात्मा का हम सबके लिए यही सन्देश है—'कि यह आलस्य वास्तव में सभी विकारों का राजा है। क्योंकि इसके आ जाने से अन्य सभी विकार अथवा दुर्गुण भी आ जाते हैं। अतः कभी भी आलस्य को अपने पास फटकने मत देना।'

○

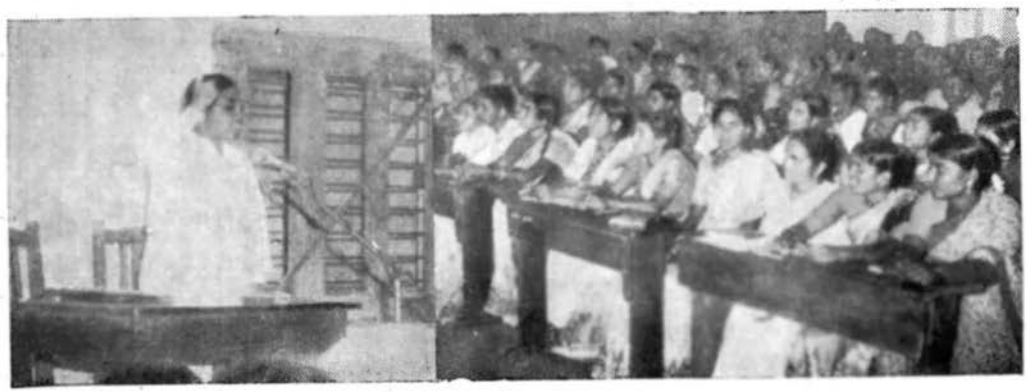

बेलगाम में प्रशिक्षण लेने वाले शिक्षकों को राजयोग शिविर कराया गया। ब्र० कु० ऊषा उनके समक्ष प्रवचन करते हुए

निश्चय बुद्धि विजयन्ति

ले०-ब्र० कु० सुधा, शक्तिनगर, दिल्ली

ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा शिव द्वारा उच्चारे गये महावाक्यों में बहुत ही गहराई समाई हुई होती है जिस गहराई में जाने से ही आत्मा बहुमूल्य माणिक प्राप्त करती है। जिस प्रकार सागर की गहराई में जाने वाला मनुष्य ही अनेक मोती, रत्न आदि प्राप्त करता है इसी प्रकार ज्ञान सागर की गहराई में जाने वाली आत्मा भी अपने को सम्पन्न अनुभव करती है। शिव बाबा द्वारा उच्चारित महा-वाक्यों में एक सुप्रसिद्ध महावाक्य है—'निश्चय बुद्धि विजयन्ति।' यूँ तो सुनने में और पढ़ने में ये बोल बहुत ही साधारण प्रतीत होते हैं परन्तु वास्तविकता यह नहीं है। इसके अर्थ पर सही रीति विचार करने पर ही इसकी गहराई का मालूम हो सकता है। आइये, आज हम भी इसके अर्थ को जानकर उसके अर्थ-स्वरूप में टिकने का पुरुषार्थ करें।

'निश्चय बुद्धि विजयन्ति'—इस महावाक्य का सरल और स्पष्ट शाब्दिक अर्थ तो यही है कि निश्चय बुद्धि आत्मा की विजय होती है। परन्तु प्रश्न यह उठता है कि किसका निश्चय, कौन सी विजय ? आत्मा किस बात का निश्चय करे और उससे उसे किस प्रकार की विजय प्राप्त होगी ?

परमपिता परमात्मा शिव के महावाक्यों के अनुसार मुख्य रूप से चार बातों का अथवा यों कहें कि ईश्वरीय ज्ञान के मुख्य चार बिन्दुओं का निश्चय होना चाहिए तभी आत्मा सम्पूर्ण विजय प्राप्त कर सकती है।

१. **शिव बाबा पर निश्चय**—श्रीमद्भगवद्गीता में भी परमात्मा के महावाक्य हैं कि 'हे अर्जुन, मैं जो हूँ, जैसा हूँ तू मुझे मेरे द्वारा वैसा ही जानकर और मानकर मुझसे बुद्धि का योग लगा···' अतः शिव बाबा पर निश्चय होने का तात्पर्य यही है कि वह जो है, जैसा है, जिस स्वरूप से पार्ट बजा रहे हैं, इस सृष्टि पर अपना दिव्य कर्त्तव्य कर रहे हैं, उसको वैसा ही जानना और मानना। अर्थात् यह निश्चय करना कि कल्याणकारी परमात्मा शिव ही धरा पर अवतरित होकर मुझ आत्मा को पतित से पावन बनाने के लिए ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। अतः मुझे उनकी हर श्रीमत का पालन करना ही है। उन द्वारा दी गई श्रीमत मेरे लिए कल्याणकारी है क्योंकि वे त्रिकालदर्शी हैं, सर्वज्ञ हैं, आदि, मध्य और अन्त के ज्ञाता हैं, सर्व आत्माओं के जन्मों की कहानी को जानते हैं, सर्व के शुभ चिन्तक हैं, इस-लिए उनका हर बोल मेरे हित के लिए ही है और इसीलिए मुझे उनकी हर आज्ञा को शिरोधार्य करना है। ऐसी निश्चय बुद्धि आत्मा निश्चित रूप से श्रेष्ठ पद पाने की अधिकारी होती है अर्थात विजयी होती है।

२. **परमात्मा द्वारा दिये जा रहे ईश्वरीय ज्ञान को स्पष्ट रूप से जानना और मानना**—निश्चय बुद्धि होने का दूसरा पहलू यह है कि शिव बाबा पर पूर्ण निश्चय होने के साथ-साथ उन द्वारा दिये गये ज्ञान के हर बिन्दु पर भी निश्चय होना चाहिए। आत्मा, पर-मात्मा, सृष्टि चक्र, रचयिता और रचना के आदि, मध्य और अन्त का ज्ञान तथा अन्य सभी बातों पर पूर्ण निश्चय होने से हम सहज ही अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकते हैं। उदाहरण के तौर पर ईश्वरीय महावाक्यों के अनुसार हम यह जान जाते हैं कि कलियुगी सृष्टि का अन्त अब नज़दीक है और सत-युगी दुनिया का पुर्नआगमन शीघ्र ही होने वाला है तो हम कलियुगी लक्षणों को अपने जीवन से निकालने का और सतयुगी दैवी लक्षणों को धारण

करने का पुरुषार्थ कर सकते हैं। अपने जीवन को सहज ही पवित्र बना सकते हैं। इसी प्रकार जब हमें यह निश्चय हो जाता है कि यह हमारा ८४वाँ अन्तिम जन्म है और इसी अन्तिम जन्म से परमात्मा द्वारा दी गई शिक्षाओं को अपनाकर हम २१ जन्मों के लिए अटल, अखण्ड स्वर्गिक राज्य-भाग्य की प्राप्ति कर सकते हैं तो हमारे पुरुषार्थ की गति बढ़ जाती है। कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान स्पष्ट हो जाने से हम किसी भी परिस्थिति से हलचल में नहीं आ जाते बल्कि अचल, अडोल और निरन्तर श्रेष्ठ स्थिति में ही स्थित रह सकते हैं। इस प्रकार विचार करने पर आप पायेंगे कि परमात्मा की पढ़ाई के हर बोल का निश्चय हमें इस आध्यात्मिक पथ पर विजयी बना देता है।

३. **स्वयं पर निश्चय**—परमात्मा और परमात्मा की पढ़ाई पर निश्चय होने के साथ-साथ स्वयं पर निश्चय होना भी अत्यधिक आवश्यक है। स्वयं पर निश्चय से तात्पर्य यह नहीं कि मुझे सिर्फ इतना निश्चय हो कि मैं एक आत्मा हूँ अपितु मैं कितनी श्रेष्ठ आत्मा हूँ, परमात्मा ने मुझ आत्मा को देवता बनाने के लिए चुना है, इस सृष्टि ड्रामा में मुझ आत्मा का एक विशेष ही पार्ट है, जैसा कर्म मैं करूँगी अथवा करूँगा, मुझे देखकर अन्य सभी भी वैसा ही करेंगे, मैं आत्मा कल्प-कल्प की विजयी आत्मा हूँ, अनेक बार मैंने विकारों पर विजय प्राप्त की है और अब भी मुझे करनी है, सफलता तो मुझ आत्मा का जन्म-सिद्ध अधिकार है—इस तरह अपने पर, अपने महान पार्ट पर, अपनी श्रेष्ठ स्थिति पर, अपने चमकते हुए भाग्य के सितारे पर पूर्ण निश्चय हो।

कभी-कभी ऐसा होता है कि कुछ आत्माओं को यह तो निश्चय होता है कि शिव बाबा हमें पढ़ा रहा है, श्रीमत दे रहा है परन्तु उन्हें अपने ऊपर निश्चय नहीं होता कि हम श्रीमत पर चल भी पायेंगे या नहीं। वे यह सोचना शुरू कर देते हैं कि बाबा जो कहते हैं, वह तो सब ठीक है परन्तु हममें इतनी सामर्थ्य कहाँ जो हम इसे अपने जीवन में धारण कर पायें। और इस प्रकार स्वयं पर निश्चय न होने के कारण वे परिस्थितियों में डगमगा जाते हैं, छोटी-छोटी समस्याएँ उन्हें डांवाडोल कर देती हैं, उनकी मानसिक स्थिति हलचल में आ जाती है। परन्तु इसके विपरीत अगर उन्हें अपने पर निश्चय हो कि मैं आत्मा सर्व समर्थ, सर्वशक्तिवान पिता की सन्तान हूँ, वह पिता मेरी बैक बोन (Back Bone) है, तो मेरे लिए कोई समस्या रुकावट नहीं बन सकती—ऐसी निश्चय बुद्धि आत्मा कभी भी अपने पथ से विचलित नहीं होती और उत्तरोत्तर उन्नति के शिखर पर पहुंचती जाती है।

४. **वर्तमान समय का निश्चय**—विजयी बनने के लिए यह निश्चय होना भी बहुत ज़रूरी है कि वर्तमान समय पुरुषोत्तम, कल्याणकारी संगम युग, जो चढ़ती कला का युग है, चल रहा है। यही समय है जबकि कल्याणकारी शिव बाबा इस धरा पर अवतरित होकर हम आत्माओं को पुरुष से उत्तम अथवा मानव से देव पद दिलाने का पुरुषार्थ करा रहे हैं। यही जीवन हमारा हीरे तुल्य जीवन है जिसका एक-एक सेकण्ड अति अनमोल है और इसलिए हमें एक पल भी वृथा नहीं गंवाना है। इस कल्याणकारी युग में जबकि हमने कल्याणकारी पिता का हाथ पकड़ा है, हमारा हर बात में कल्याण ही कल्याण है, हमारा अकल्याण हो ही नहीं सकता। इस प्रकार वर्तमान समय की श्रेष्ठता का निश्चय होने से हमारे कर्मों में भी श्रेष्ठता आती है और आखिर हम विजय की मंज़िल को प्राप्त होते हैं।

अतः निश्चय बुद्धि विजयन्ति का अर्थ यही है कि उपरोक्त चारों बातों का निश्चय होने से हम हर संकल्प, बोल और कर्म में विजयी बनते हैं, माया रावण द्वारा आने वाली परीक्षाओं में हम सौ फीसदी सफल होते हैं और आखिर श्रेष्ठतम पद, सतयुगी देव पद को प्राप्त करते हैं।

उत्तर—१. काली, २, चढ़ती कला सर्व का भला, ३. त्रेता और द्वापर के संगम पर, ४. मनमनाभव, ५. शक्ति फर्स्ट, ६. सत्यता, ७. ९ लाख आत्माएँ

अहमदाबाद—मनीनगर सेवाकेन्द्र पर गुजरात के मुख्य-मन्त्री के मुख्य सचिव सम्बोधित करते हुए। ब्र० कु० शारदा अनुवाद कर रही हैं।

होशियारपुर में सिविल हास्पीटल में डाक्टर्स स्नेह मिलन पश्चात् ग्रुप फोटो।

शोलापुर संग्रहालय में ब्र० कु० सोमप्रभा नगर निगम प्रशासक भ्राता ए० के० नन्दकुमार जी को चित्रों पर समझाते हुए।

जालना जिला के वडीगोद्री ग्राम में प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए जायकवाडी प्रकल्प के कार्यकारी अभियन्ता भ्राता बसन्तकर जी।

फतेहगढ़ में श्रीमती इन्द्रा गांधीजी के निधन पर आयोजित योग सभा में श्रद्धांजली देती हुई ब्र० कु० सुमन जी।

रायगढ़ में आध्यात्मिक प्रदर्शनी में राईस मिल के मैनेजर भ्राता बाबूलाल शर्मा को ब्र० कु० चित्रा, चित्रों पर समझाते हुए।

कलकत्ता में कोननगर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्-घाटन करते हुए सुप्रसिद्ध डॉ० नीलमणि बेनर्जी।

एशिया के सबसे बड़े सीमेंट प्लान्ट, वाडी के महाप्रबन्धक भ्राता डी. पी. बोरकर को ब्र० कु० दशरथ साहित्य भेंट करते हुए।

राजनांदगांव में 'दिग्विजय' महाविद्यालय के प्राचार्य भ्राता मेघनाद जी को चित्रों पर व्याख्या देती हुई ब्र० कु० जयन्ती जी।

अबोहर सेवाकेन्द्र की ओर से गोविन्दगढ़ में प्रदर्शनी के चित्रों को ब्र० कु० किरण से समझते हुए सरपंच रोशन लाल जी!

भुज-कच्छ में आनन्द मेले में विश्व नव निर्माण स्टाल का उद्घाटन कर रहे हैं मोहन भाई शाह। साथ में ब्र० कु० बहिनें तथा अधिकारीगण खड़े हैं।

कृष्णागिरी में राजयोग प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर गीता महल के प्रबन्धक ट्रस्टी भ्राता कृष्णाप्पा चेत्तीयार अपने विचार प्रकट कर रहे हैं।

आपने मुरली कितने ध्यान से पढ़ी है ?

ब्र० कु० पुष्पा, लक्ष्मी नगर, देहली

नीचे हम प्रश्न दे रहे हैं। जो कि वर्तमान मुरलियों पर आधारित हैं। प्रत्येक प्रश्न के नीचे उसके संभावित चार उत्तर हैं, अब आपने उन दिये गये संभावित चारों उत्तरों में से एक सही चुनना है, और फिर अन्त में दिए गये सही उत्तरों से उनका मिलान करना जो कि इसी अंक में कहीं पर दिये गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दिए गये उत्तरों से मिलान करने के पश्चात आप स्वयं ही इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी याददाश्त कितनी है और मुरली कितने ध्यान से पढ़ी या सुनी है।

(१) निर्भय की शक्ति का यादगार भक्ति मार्ग में हमारा किस रूप में दिखाया गया है ?

(क) चण्डी देवी का यादगार
(ख) काली देवी का यादगार
(ग) हनुमान का यादगार
(घ) अंगद का यादगार

(२) संगमयुग (धर्माऊ युग) को एक विशेष वरदान है जो और किसी युग को नहीं, वो कौन-सा एक वरदान है ?

(क) मनुष्य से देवता बनने का
(ख) भगवान से मिलने का
(ग) चढ़ती कला, सर्व का भला
(घ) अविनाशी कमाई करने का

(३) रावण का आने का समय कौन-सा है ?

(क) द्वापर के शुरू में
(ख) जब से भक्ति शुरू होती है
(ग) त्रेता और द्वापर के संगम पर
(घ) २५०० वर्ष खत्म होने के बाद

(४) हम बच्चों का महामंत्र कौन-सा है, जिससे माया वश में हो जाती जिसे ही वशीकरण मन्त्र भी कहते हैं ?

(क) मामेकम्
(ख) एक बाप दूसरा न कोई
(ग) बाबा
(घ) मनमनाभव

(५) बाबा ने आकर हम बच्चों को कौन-सा नारा दिया जो उसके बाद से दुनिया में भी वह शुरू हुआ ?

(क) वन्देमातरम्
(ख) पहले आप
(ग) लेडीस फर्स्ट
(घ) शक्ति फर्स्ट

(६) बाप की प्रत्यक्षता का आधार क्या है ?

(क) जब गीता का भगवान प्रत्यक्ष होगा
(ख) सत्यता
(ग) सन शोज फादर
(घ) जब सबको परमात्म अनुभूति होगी

(७) पूरे ८४ जन्म कौन-सी आत्मायें लेती हैं ?

(क) श्री लक्ष्मी श्रीनारायण की आत्मा
(ख) ९ लाख आत्मायें
(ग) देवी घराने की आत्मायें
(घ) १६, १०८ आत्मायें

प्रेम की नींव पर रामराज्य की चारदीवारी

ब्र० कु० सुशील, मुजफ्फरपुर (बिहार)

जगत् के सर्व रहस्यों का द्वार है—'प्रेम'। प्रेम असंभव को भी संभव बना देता है, निर्बल आत्माओं में बल भर देता है, बेहोश को होश में ला देता है तथा पाशविक वृत्तियों को मानविक वृत्तियों में बदल देता है। परिवर्तन की यह क्षमता है तो केवल प्रेम में। प्रेम वह सुमन है जिसकी चैतन्य खशबू बिन बयार ही दूर दरार तक चली जाती है और कमाल तो यह है कि अगर किसी अंधे से नथनों में भूल से भी यह खशबू पहुँच जाए तो उसे फौरन आँखें मिल जाती हैं और वह इस खशबू से बींधा हुआ खींचकर प्रेम सुमन तक पहुँच जाता है।

समस्त दैवी सम्पत्तियों का मूल स्रोत है—प्रेम। प्रेम ही ईश्वरीय ज्ञान का 'महामंत्र' है। इसलिए जहाँ प्रेम है वहाँ ईश्वरीय सम्पत्ति जैसे—सहिष्णुता, सद्भावना, दया, क्षमा, त्याग, करुणा, विश्वास, अहिंसा, सरलता, नम्रता, उदारता, सेवा, मित्रता, प्रसन्नता, हर्षितमुखता, सहनशीलता आदि अनेक दैवी गुण सहज ही उत्पन्न हो जाते हैं। इतने गुणों के खजानों के स्वामी के इर्द-गिर्द आनंद, उल्लास, उमंग, आत्मीयता, शांति तथा संतुष्टता आदि पक्षी चक्कर लगाते रहते हैं तथा उसके ऊपर निर्भयता, निडरता, निशंसयता और निश्चितता के वर्षा की झड़ी बारहो मास, छत्तीसों दिन लगी रहती है और वह सुखों के झूले में निर्विघ्न झूलता रहता है। देखा न आपने, एक प्रेम का प्रताप !

इसके विपरीत जहाँ प्रेम नहीं है वहाँ अवश्य ही स्वार्थ है। अब देखिये स्वार्थ का संताप ! स्वार्थ समस्त आसुरी गुणों का मुखिया है। स्वार्थ से भय उत्पन्न होता है और जहाँ भय आया तुरंत अविश्वास आकर दुखों का बागडोर अपने हाथ में संभाल लेता है और शत्रुओं की एक काफी लम्बी कतार जीवन के वट वृक्ष के नीचे एकत्रित कर देता है। वे शत्रु है—असहिष्णुता, कामना, ईर्ष्या, द्वेष, वैर, असत्य, दम्भ, कपट, लोभ, क्रोध, घृणा, हिंसा, परिग्रह, दुर्भाव, कृपणता, कुटिलता, परायापन आदि। और इस सबके पीछे तुरही फँकने वाली है—कायरता। जो आसुरी सम्पत्तियों का मालिक है वह शोक, विषाद, क्लेश, कलह और अशांति के कीचड़ में कीच-कीच करता रहता है।

प्रेम है तो योग है, स्वार्थ है तो वियोग है। प्रेम अर्थात् भाईचारा अर्थात् सहानुभूति। सहानुभूति का अर्थ क्या है ? सह अर्थात् सहयोग (Co-operation) और अनुभूति (feeling) अर्थात् एक दो को यदि एक दूसरे से, निम्न से उर्ध्व की दिशा में उठने और उठाने में जो भी सहयोग प्राप्त हो उसकी अनुभूति होना ही सहानुभूति है और वही प्रेम है।

अब प्रेम है क्या चीज ?

प्रेम की परिभाषा करना उतना सहज नहीं है। फिर भी यह कहना शायद अतिशयोक्ति नहीं होगा कि—"आत्मा का, आत्मा के लिए निष्पादित वह सम्यक् व्यवहार जो आत्मा को ऊपर उठाने में उमंग उल्लास प्रदान करे—प्रेम है।" इसके विपरीत "शरीर के लिए, शरीरधारी के द्वारा, शरीर धारी के प्रति किया गया व्यवहार—स्वार्थ है।" स्पष्ट है कि प्रेम वास्तव में आत्मा को बलशाली बनाता है जबकि देह और देहधारियों के लिए किया गया सभी कार्य स्वार्थवश किया जाता है।

आज चारों ओर से आवाज एक ही आ रही है—अशांति ! अशांति !! अशांति !!! आखिर इस अशांति का कारण क्या है ? प्रेम की कमी। आज सृष्टि से वास्तविक प्रेम (Real love) पूर्णतः लोप हो चुका है। मानव-मानव से बस एक ही

अपेक्षा रखता है—प्रेम की। इसके लिए वह अनेकों से अनेकों प्रकार का सम्बंध जोड़ता है, अनेक सोसाइटियाँ अटैंड करता है। लेकिन परिणाम ? और ही अशांत होता चला जाता है। कारण जिस अमृत की तलाश में वह सोसाइटियों में जाता है, उसका एक बूँद भी उसे नसीब नहीं हो पाता। स्वार्थ से लबालब भरे कलशों से परायापने का गर्म भाप उसके मुख पर निराशा का फफोला उठा देता है; लाचार होकर उसे कहना पड़ता है कि आज की सभी सोसाइटियाँ उस विसुकी भैंस की तरह है जिससे एक बूँद भी शांति का दूध पाना संभव नहीं है।

आदि सृष्टि प्रेममय थी

भारतीय शास्त्र गवाह हैं कि जब सृष्टि पर सतयुग था तब सम्पूर्ण विश्व ही प्रेममय था। सम्पूर्ण विश्व में प्रेम की हिलोरें लहरा रही थीं। हर हृदय में प्रेम का शुद्ध और शीतल बहाव था। प्रेम की इसी शुद्धता के कारण उस समय के मनुष्य निडर, निर्भय और निश्चिंत थे तथा देवी-देवताएँ कहलाये जाते थे। स्वार्थ का नामोनिशान नहीं था। सभी धन्य-धान्य से इतने पूरित थे कि वहाँ 'इच्छा मात्रम अविद्या' थी। सम्पूर्ण सृष्टि को पैराडाइज, बैकुंठ या स्वर्ग कहा जाता था। देवी देवताओं में प्रेम का स्वच्छ और स्वच्छंद संचार ही नहीं बल्कि उनका वह प्रेम पूर्णतः अकामुक, निहेर्तुक तथा आदर्श था। मानव तो खैर मानव थे, पशु पक्षियों में भी प्रेम कम नहीं था। कहते हैं बाघ और गाय' निडरता-पूर्वक एक ही घाट पर पानी पीते थे! इससे बढ़कर और क्या दिया जा सकता है, उस समय के प्रेम का सबूत। प्रम के कारण ही देवताएँ आपस में एक मत और एक मन थे।

मध्य में भी प्रेम ही प्रधान

सृष्टि का मध्ययुग द्वापर है। सतयुग त्रेता तक सृष्टि चक्र में केवल पूज्यों का ही निवास था। यही पूज्य जब द्वापरयुग में आये तो पुजारी बनकर भक्ति शुरू की। इस तरह इस युग को भक्तियुग भी कहा जा सकता है। भक्ति में प्रेम ही सर्वोपरि था। भक्त सदैव भगवान के प्रेम में अतिरेक रहते थे। भक्ति में बुद्धि से ज्यादा महत्वपूर्ण चीज है भावना। जिसकी भावना में ईश्वर के प्रति प्रेम भर गया, तो बिना बुद्धि का भी वह भगवान को रीझाने में सफलता हासिल कर लेता है। अगर बुद्धि है और भावना नहीं है तो बात पहले से कुछ मंहगी पड़ जाती है। इसी प्रेम के कारण भक्तों में मीरा, सूरदास, शबरी आदि ने जगत प्रसिद्धि को प्राप्त कर लिया।

कलियुग में प्रेम का रूप विकृत

कलियुग तक आते-आते प्रेम का रूप पूरा ही बदल गया। अब प्रेम वासना का रूप धारण करने लगा। मनुष्यों ने भ्रमवश प्रेम का नाम 'काम' दे दिया। वासना की आग लगते ही प्रेम का पुष्प कुम्हलाने लगा, परिणामस्वरूप जीवन के अहेर्तुक प्रेम की कमी सदा बनी रहो।

कहते हैं—"है प्रेम जगत में सार और कुछ सार नहीं।" और यह सत्य भी है। आज के मनुष्य एक दूसरे से प्रेम की चाहना तो रखते हैं लेकिन बदले में कुछ और ही हाथ आ जाता है। आज पिता-पुत्र, पति-पत्नी, माँ-बेटा या दोस्तों का सम्बंध क्यों सफल नहीं दिखाई देता ? चाहते तो सभी हैं एक दूसरे को उचित प्रेम करना; लेकिन प्रेम को न जानने के कारण कहीं मोह को, कहीं वासना को तो कहीं स्वार्थ या लोभ को प्रेम समझ बैठते हैं और बाद में हाथ मलते रोते-धोते हैं। सच पूछा जाय तो आज संसार में वास्तविक प्रेम का पूर्णतः आभाव है और प्रेम का जो थोड़ा बहुत रूप दिखाई भी पड़ रहा है वह वास्तव में प्रेम नहीं बल्कि काम, लोभ, मोह और चतुराई है।

वास्तविक प्रेम का रूप

कहने को तो सभी कहते हैं कि "अमुक अमुक को काफी प्रेम करता है। मेरे द्वारा सबको समान

प्रेम उपलब्ध हो रहा है। लेकिन क्या प्रेम का सौदा इतना सस्ता है जो सब कर सकते हैं ? वास्तव में जैसे वायु का संचार हरेक प्राणी मात्र के शरीर में होता है वैसे ही प्रेम का अविरल बहाव हर हृदय में होना चाहिए था, लेकिन ऐसा नहीं है। फिर भाइचारा कैसे आवे ? लोग अन्यत्र प्रेम खोजते हैं, और इस बात को भी अच्छी तरह समझते हैं कि प्रेम न तो खेतों में उपजने वाली वस्तु है और न ही हाट में विकने वाली चीज। प्रेम तो वास्तव में वह पुष्प है जो केवल शुद्ध हृदय में ही खिलता है। और जिस हृदय के आँगन में यह पुष्प खिला रहता है वह व्यक्ति इतना निश्चित और निर्भीक होता है कि अपने कर्त्तव्य पालन में, सत्य भाषण में, त्याग और सेवा में तनिक भी नहीं कतराता है। महान ते महान समस्याओं को वह इस प्रकार काट देता है जैसे हीरा शीशे को। वह व्यक्ति अत्यंत तेजस्वी, दृढ़प्रतिज्ञ, साहसी, विनम्र, मधुरभाषी और शाँत-प्रिय हो जाता है। जिस वृक्ष में काम क्रोध के काँटे लगे होते हैं उसमें प्रेम का कुसुम कभी भी नहीं खिल सकता। प्रेम सागर-जल के समान चंचल नहीं वरन हिमालय सदृश निश्चल है। जहाँ स्वार्थ है वहाँ मोह अवश्य है और जहाँ मोह है वहाँ प्रेम टिक नहीं सकता। जैसे सतयुग का फल कलियुग में नहीं मिल सकता वैसे ही प्रेम का फूल कामुक हृदय में नहीं खिल सकता।

सच पूछा जाय तो प्रेम न तो किसी सम्बंधियों में मिल सकता, न ही पूजा-पाठ, वैराग्य, जप-तप, साधना आदि में मिल सकता। वस्तुतः वास्तविक प्रेम तो केवल प्रेम के सागर एक परमात्मा पिता से ही मिल सकता है। परमात्मा से इसी प्रेम को प्राप्त करने का ही नाम योग है। और ऐसा प्रेम तभी प्राप्त हो सकता है जब हमें एक प्रेम के सागर के सिवा और कोई याद न आवे। जब ऐसी स्थिति आती है तब हमारे अन्दर एक बल का संचय होने लगता है जिसे योग बल कहते हैं, और यह बल हमारे मन में समभाव और समता की भावना उत्पन्न करता है जिससे हर प्राणी के अन्दर आत्मा ही दिखाई पड़ने लगती है और तभा सच्चा प्रेम-स्वरूप बन जाते हैं।

प्रेम और वासना में अन्तर

आज वासना को जो लोग प्रेम की संज्ञा देते हैं उन्हें एक बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि प्रेम और वासना में महान अन्तर है। और यह अन्तर उतना ही है जितना सागर के जल और मृग-मरीचिका के बीच। वासना विनश्वर और प्रेम अविनाशी है। वासना सर्व दुखों का मूल है लेकिन प्रेम आनंद का सुधा सरोवर है। वासना कांटा है जो सदा चुभता रहता है तो प्रेम वह फूल है जो सदा खशबू बिखेरता रहता है। प्रेम को वासना समझने वाला मोह के दलदल में इस प्रकार आकंठ धँस जाता कि फिर बचने का कोई उपाय ही नहीं होता। वासना से भरा हृदय डरपोक होता है, कायर होता है लेकिन शुद्ध प्रेम से आच्छादित आत्मा निडर, निर्भय, वीर और मत्यु पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। जिस प्रकार सूर्य के डर से अँधेरा भागकर छुप जाता है वैसे ही शुद्ध प्रेम के भय से वासना रूपी निशाचर भी भाग खड़ा होता है। शुद्ध प्रेम के पुष्प पर वासना का भँवरा बैठ नहीं सकता। संकल्प मात्र से वह झुलस पड़ेगा। प्रेम का सम्बंध मूल रूप से आत्मा के साथ है जबकि वासना का सम्बंध देह के साथ है।

वास्तविक सच्चा प्रेम एक प्रेम सागर परमात्मा के सिवा और कोई भी नहीं दे सकता। अतएव वह वासनाओं से पूर्ण अनभिज्ञ है। वह जो भी प्रेम हमें देता उसका बदला नहीं चाहता। निस्वार्थ प्रेम एक उसके सिवा कोई भी कर नहीं सकता। वह है ही प्रेम का सागर। बस प्रेम उडेलता ही जाता है।

प्रेम की नींव पर राम-राज्य की चार-दीवारी

आज विश्व के अन्दर विद्रोह, वैर, ईर्ष्या आदि अपना आसन अच्छी तरह जमा चुके हैं। सतयुग के अनुपात में आज का युग कौड़ी समान भी नहीं है। जो भी महापुरुष आते रहे, उन्होंने एक ही

आवाज उठायी—भाईचारे की। बापू ने भी आपसी स्नेह, सद्भावना और भाईचारे पर ज़ोर दिया। गाँधी जी का सपना ही था राम-राज्य। बापू चले गये लेकिन राम-राज्य की एक झलक भी नहीं झलक सकी। अभी की हालत पहले से कहीं अधिक बदतर हो चुकी है। न भाईचारा ही स्थापित हो पाया और न राम-राज्य की कोई किरण ही धरती पर उतर पायी। वैसे "राम राज्य हो ! राम-राज्य हो ! !" का नारा तो सभी लगाते हैं। लेकिन नारेबाज़ी से राम-राज्य थोड़े ही आ जायेगा। जैसे भूख-भूख कहने से भूख नहीं मिट सकती, सुख-सुख रटने से ही सुख नहीं मिल सकता, वैसे ही राम-राज्य नहीं आ सकता। भूख मिटाने के लिए भोजन करना ही पड़ेगा, सुखों के लिए उद्यम करना ही पड़ेगा। ठीक ऐसे ही जब हम राम-राज्य के आदर्शों को अपने में धारण करेंगे तभी राम-राज्य आ सकेगा।

वास्तव में राम-राज्य की स्थापना कोई इन्सान नहीं कर सकता। यह कार्य तो परमात्मा का है। वही जब आते हैं तब इसकी स्थापना करते हैं।

विश्व में परिवर्तन की आवश्यकता आज सभी महसूस कर रहे हैं। समझते भी हैं कि परिवर्त्तन होना ही है; लेकिन वह परिवर्त्तन कोई ऐसे नहीं होगा कि आकाश नीचे और धरती ऊपर चली जायेगी, बल्कि यह दुनिया जो बिगड़ चुकी है, वह फिर से सुधर जायेगी। अब इतना बड़ा कार्य जिसमें सारी सृष्टि ही बदलकर नयी हो जाय, क्या किसी इन्सान द्वारा संभव है। कभी नहीं। यह कार्य तो स्वयं उस सच्चे बापू जी को करना पड़ता है जिसका नाम ही है बिगड़ी बनाने वाला। लिब्रेटर, गाइड ये सब नाम हैं उस सत्ता के जो रावण-राज्य में से राम-राज्य ले जाते हैं और वह हैं एकमात्र निराकार परमपिता परमात्मा शिव बाबा।

परमात्मा इस मृत्युलोक में आते ही हैं अमरलोक रचने। "यदा-यदाहि धर्मस्य···" के अनुसार धर्म की अति ग्लानि के समय उन्हें धरती पर आना पड़ता है और पुनः उसी धर्म की स्थापना करनी पड़ती जो धर्म प्रायः लोप हो चुका होता है।

वर्तमान समय वही समय है जब आदि सनातन देवी-देवता धर्म प्रायः लोप हो चुका है। धर्म की अति ग्लानि का समय है यह। यही उपयुक्त समय है परमात्मा के अवतरित होने का। अतः कोई माने न माने परमात्मा राम-राज्य की स्थापना स्वयं कर रहे हैं और बच्चों द्वारा करा भी रहे हैं।

परमात्मा ने आत्माओं में फिर से दैवी संस्कार उभारने के लिए प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लिया। चूँकि आत्माओं पर पाँच भूतों का इतना अधिक प्रभाव हो चुका था कि वह बेहोश-सी थीं। बेहोशी की हालत में परमात्मा को पहचानना आसान नहीं होता अगर परमात्मा अपने प्रेम के द्वारा उन्हें अपने पास आकर्षित नहीं करते। विकारों की अग्नि को परमात्मा ने प्रेम के गंगा-जल से शांत किया। परमात्मा के अमूल्य प्रेम ने ही आत्माओं को वह आँख दी जिससे वह भगवान को पहचान सके। परमात्मा ने मन, वचन और कर्म तीनों से प्रेम की बौछार की। "मीठे बच्चे ! मीठे बच्चे ! !" की जहाँ रुहे आफजा पिलायी, वही बच्चों को शाबाशी दे-देकर आगे भी बढ़ाया। 'महावीर' 'स्वदर्शन-चक्रचारी' 'विघ्न-विनाशक' 'शिव-शक्ति सेना' आदि-आदि शब्दों के द्वारा बच्चों की पीठ थपथपायी। अपने प्रेम भरे शब्दों से बच्चों में इतना जोश भरा कि वे विकारों पर जीत पाने को राजी हो गये। इतना ही नहीं आत्माओं को परमात्मा से अधिक प्यार कौन कर सकता। उनके प्रेम के ये शब्द किसके कानों में नहीं गुंजते होंगे—'ज्ञान-गुलजारी' 'रुहे-गुलाब' 'होली-हंस' 'ज्ञान-गंगायें' 'ज्ञान-पंखुड़ियाँ' आदि जो आत्माओं प्रति उडेला गया। प्रतिदिन मीठे-मीठे बच्चे कह जहाँ ज्ञान-स्नान कराया वही लाडले और सिकिलधे बच्चे कह साथ खिलाया, साथ बैठाया, सर्व सुखों के झूले में झुलाया। सभी बच्चों का समान खयाल

(शेष पृष्ठ १३ पर)

वे लोग मुझे अच्छे नहीं लगते

ब्र० कु० आत्मप्रकाश, आबू पर्वत

(सुशील अपने घर के समीप स्थित सुन्दर बगीचे में अपने मित्र प्रेम के साथ)

सुशील—प्रेम, इधर तो आओ, देखो ये गुलाब का फल काँटो के बीच कितना अच्छा लग रहा है।

प्रेम—हाँ भैया, ये फूल तो अपने रूप रंग व सुगन्ध से मनमोहक बन गया है। लेकिन जब हवा के झोंके आते होंगे तो क्या इसे काँटे नहीं चुभते होंगे ?

सुशील—क्यों नहीं, काँटों के साथ-साथ ही तो उसका जीवन वीतता है। फिर भी वह काँटों को अपना विरोधी न मानकर अपना अंगरक्षक समझते हुए सदा प्रसन्न रहता है।

प्रेम—सुशील भैया, ऐसे ही आज के इस कलियुगी तमोप्रधान—काँटों भरी दुनिया में फूल जैसे सुख-दाई लोग विरले ही दिखाई देते हैं।

सुशील—क्यों, ऐसी क्या बात है···

प्रेम—देखो, अभी दो घंटे पहले मैंने अपने पिताजी से कहा मैं अपने मित्र के पास जा रहा हूँ। तो उन्होंने कहा कि भले जाओ लेकिन संग अच्छा रखना।

सुशील—फिर आपने क्या जवाब दिया।

प्रेम—मैंने कहा कि, पिताजी मैं सुशील के पास जा रहा हूँ। तो खुशी से कहने लगे, उसके पास भले जाओ। सुशील तो—नम्रचित्त और अच्छे विचारों वाला व्यक्ति है।

सुशील—प्रेम, ऐसी कोई बात नहीं है, मुझसे भी बहुत अच्छे व्यक्ति अपने शहर में हैं।

प्रेम—सुशील भैया, आप कुछ भी कहो, अच्छे संग की प्राप्ति भी अपने भाग्य पर निर्भर है। आप जैसे महान व्यक्ति के संग को पाकर मैं स्वयं को भाग्यशाली समझता हूँ।

सुशील—प्रेम, जो स्वयं अच्छा व्यक्ति होता है, उसे सभी अच्छे लगते हैं। मेरे विचार से तो आपको सभी अच्छे लगते होंगे।

प्रेम—सुशील भैया, मुझे गुणवंत काका जो अपने पड़ोस में रहते हैं वो भी अच्छे लगते हैं। क्योंकि जब भी मैं उन्होंसे मिलता हूँ, वो सदा महिमा के बोल रूपी पुष्पों से ही स्वागत करते हैं। आज तक मैंने उन्होंके मुख से कभी भी कटु वचन नहीं सुने।

सुनील—हाँ ज़रूर, जो व्यक्ति सदा दूसरों की महिमा करता है वह तो महान होता ही है और सभी को अच्छा लगता है। लेकिन प्रेम, तुम बहुत भोले हो, क्या जो महिमा करते हैं केवल वो ही अच्छे होते हैं, बाकी नहीं।

प्रेम—सुशील भैय्या, ये तो सर्व विदित है कि जो सदा सभी की महिमा या स्तुति करते हैं, वो ही अच्छे होते हैं। ग्लानि करने वाले को कौन पसंद करेगा।

सुशील—लेकिन प्रेम, ये कभी नहीं भूलना कि कभी-कभी महिमा करने वाले भी निंदा करने लगते हैं।

प्रेम—क्या ऐसा भी होता है, ये तो मैं आज नई बात सुन रहा हूँ···

सुशील—मुझे इस बात का बहुत अच्छा अनुभव है। देखो प्रेम, मेरी चाची पिताजी के होते हुए मेरी बहुत महिमा करती थी। लेकिन जब मेरे पिताजी के दुर्घटना से शरीर छोड़ने के पश्चात चाचाजी घर सम्भालने लगे। तो चाचीजी अपने प्रवीण बच्चे की महिमा और मेरी ग्लानि करने लगी। मम्मी को तकलीफ देने लगी अच्छा हुआ जो भगवान ने हमें सद्बुद्धि देकर बँटवारा कराया जिससे हम चैन का श्वास लेकर सुख शान्ति से जीवन बिता रहे हैं।

प्रेम—भैया, क्या ऐसे भी लोग होते हैं जो आज

महिमा करके—कल ग्लानि करने के लिए नहीं हिचकते।

सुशील—प्रेम, जो आज तुम्हें महिमा के लड्डू खिला रहे हैं कल ग्लानि की बोली की गोली से घायल भी कर सकते हैं। इसलिए कहावत भी प्रचलित है—"मुँह में राम, बगल में छुरी।"

प्रेम—भैया, मैं तो इस बात से बिल्कुल अनभिज्ञ हूँ।

सुशील—इतना ही नहीं प्रेम, सदा महिमा सुनते रहने से हमें धोखा भी हो सकता है।

प्रेम—वो कैसे सुशील भैया !

सुशील—महिमा सुनते रहने से हम गफलत की गहरी नींद में सो जाते हैं और देखा गया है कि महिमा को स्वीकार करने वाले महीनता में जाने की कोशिश से परे रहते हैं। क्योंकि महिमा के आधार से सदा सन्तुष्ट, वेफिकर रहते हैं जिससे हमारे जीवन में अधिक उन्नति नहीं होती है।

प्रम—भैया, इस बात से तो मैं सहमत हूँ···

सुशील—दूसरी बात यह है प्रेम, जो व्यक्ति सदा महिमा ही सुनता रहता है उसमें निन्दा सुनने की शक्ति नहीं होती जिससे वह कोमल दिल वाला बनता है।

प्रेम—फिर भी भैय्या कुछ भी कहो, निन्दा करने वाले व्यक्तियों से मुझे महिमा करने वाले अधिक अच्छे लगते हैं।

सुशील—प्रेम, लगता है अभी तक तुम्हारी समझ में नहीं आया, स्तुति सुनने से हमारी चुस्ती खत्म होकर सुस्ती आती है जो उन्नति के पथ में दीवार बनती है। इसलिए मुझे महिमा करने वाले व्यक्ति इतने अच्छे नहीं लगते जितने निन्दा करने वाले लगते हैं।

प्रेम—कैसी अजीब बात कर रहे हो भैया···

सुशील—यही तो बात समझने की है प्रेम। इसके पीछे बड़ा गुह्य राज़ है। जो इस बात को जीवन में अपना लेता है वही जीवन जीने की कला को प्राप्त करके सुख शान्तिमय जीवन जी सकता है।

प्रेम—सुशील भैया ! क्या उत्तेजना भरे कटु वचनों को सुनकर कोई व्यक्ति प्रसन्नचित रह सकता है।

सुशील—क्यों नहीं, इसमें ही तो हमारा कल्याण है।

प्रेम—वो भला कैसे ?

सुशील—निंदा करने वाले व्यक्ति को मैं अपना शुभ-चिन्तक समझता हूँ। क्योंकि जिस कमी को परखने के लिए असमर्थ होते हैं, वो हमें निन्दा के माध्यम से अपने ध्यान पर दिलाता है। इसलिए महान पुरुष सदा कहते हैं—'निन्दा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोय।"

प्रेम—भैया, निन्दा करने वाला कभी मित्र बन सकता है। अगर वो मित्र ही है तो निन्दा क्यों करेगा ?

सुशील—प्रेम, आपकी बात बिल्कुल ठीक है। देखा गया है कि महिमा करने वाला मित्र कोई कमी हमारे ध्यान पर देता है तो हम उसे सहज रीति से अथवा सरलता से स्वीकार नहीं करते। बात को टाल-मटोलकर देते हैं। वही बात कोई निन्दक द्वारा दर्शाई जाती है तो उसे निकालने के लिए हम बरबस प्रयत्न करने लगते हैं।

प्रेम (सोचते हुए)—बात तो आपकी ठीक है भैया, लेकिन···

सुशील—इसमें सोचने की क्या बात है। निन्दक ही सदा सोचता रहता है कि इसमें क्या-क्या कमियाँ हैं जिसका वर्णन मैं करूँ, तो यह परेशान हो जाय। वह निन्दा करना अपना परम कर्त्तव्य समझता है। जिससे हम सावधानी से रहकर भूलों को सुधार लेने में तत्पर रहते हैं। इसी तरह निन्दक हमें आगे बढ़ाता है।

प्रेम—भैया, निन्दक हमें आगे बढ़ाएँ ये तो नामुमकिन बात है।

सुशील—प्रेम, यह कथनी नहीं लेकिन मेरे अनुभव की बात है। आपको याद होगा, जब हम दोनों ७वीं कक्षा में पढ़ते थे, तो अपने साथ कमल नाम का लड़का पढ़ता था। जिसका सदैव पहला नम्बर आता था। मौका देखकर अपने बुद्धि के गर्व से मेरी निन्दा करता था। क्योंकि मैं एक साधारण परिवार का व्यक्ति था। लेकिन एक दिन उसके निन्दा के बोल मेरे दिल को चुभ गए जिससे मेरी

मन लगाकर पढ़ने की भावना जागृत हो गई। जिससे मैंने दिन-रात कठिन परिश्रम से अभ्यास किया और पहला नम्बर प्राप्त किया और वह देखता ही रह गया। तो अभी बताइए क्या वो मेरा मित्र नहीं है जिसने मुझे आगे बढ़ाया।

प्रेम—ये रहस्यजनक बात आपने हमसे क्यों छिपाकर रखी थी भैया।

सुशील (मुस्कराते हुए)—इतना ही नहीं प्रेम, निन्दा करने वाले व्यक्ति अगर साथ में नहीं होते तो हम अपनी गुप्त शक्तियाँ तथा गुणों से अनभिज्ञ रहते हैं जिन्हों की वे वास्तविक पहचान हमें कराते हैं।

प्रेम—सुशील भैया, आज तो मुझे बहुत खुशी हो रही है आपके साथ वार्तालाप करने में, क्योंकि कई नई बातें सीखने को मिल रही हैं।

सुशील—अरे हमें तो जीवन भर एक दो से सीखकर आगे बढ़ते रहना ही है।

प्रेम—लेकिन भैया, अगर कोई बिना मतलब टीका-टिपणी करते हैं तो मुझे अच्छा नहीं लगता है।

सुशील—प्रेम, वास्तव में टीका करने वालों ने ही हमें आगे बढ़ाने का ठेका लिया है। वे ही अपनी डयूटी अचूक बजाकर सफलता का टीका लगाते हैं।

प्रेम—क्यों, क्या वैसे हमें सफलता नहीं मिल सकती।

सुशील—जरूर मिलती है, लेकिन जितनी मिलनी चाहिए उतनी नहीं। उन्हों की मदद से सफलता में चार चाँद लग जाते हैं।

प्रेम—भैया, अगर आपकी कोई टिका-टिपणी करता है तो आपकी मन-स्थिति कैसी रहती है ?

सुशील—जब से मैं राजयोगाभ्यास कर रहा हूँ तो सर्वशक्तिवान परमात्मा से शक्तियों को प्राप्त करने से मनोबल बढ़ता है। तो मान-अपमान, निंदा-स्तुति, हार-जीत में अपनी मानसिक स्थिति को अचल अडोल निर्लिप्त रख सकते हैं।

प्रेम—तब तो भैया, वास्तव में निन्दक ही हमारे परममित्र ठहरे।

सुशील—इसमें कोई शक नहीं है। और भी उन्हों के व्यवहार से निर्भयता, सहनशीलता, सन्तुष्टता जैसे अनेक दिव्य गुण अपने जीवन में उभरने लगते हैं। इसलिए ही महिमा करने वाले लोग मुझे इतने अच्छे नहीं लगते जितने निन्दा करके आगे बढ़ाने वाले अच्छे लगते।

प्रेम—आपकी तो सचमुच कमाल है भया !

सुशील—कमाल मेरी नहीं, उन परम मित्रों की है, जिन्होंने मुझे आगे बढ़ाया।

—:○:—

गीत

ब्र० कु० सुरेश, रायपुर (म० प्र०)

मनमना भव मामेकम···२
कहते बाबा मीठे बच्चे
आया फिर संगम।

मंत्र कहे या प्यार की वाणी
जो पाता वो है वरदानी···२
इसी मंत्र ने छेड़ दी मन में,
एक रुहानी सरगम···
मन मना भव मामेकम्।

दिव्य अलौकिक प्यार लुटाते
तू आया हर मन बहलाते···२
ज्ञान के तेरे हर बोल अनुपम,
याद में तेरी सुखधाम,
मनमना भव मामेकम···

हम बच्चे तेरी आशा के दीपक,
बन गये तेरे वर्से के मालिक···२
धर्म नया हर कर्म नया,
और भाग्य पदमा पदम।
मनमना भव मामेकम्···

परमाणु युग बनाम पुरुषोत्तम युग

वर्त्तमान युग को कई लोग परमाणु युग (Atomic Era) का नाम देते हैं क्योंकि वे परमाणु शक्ति-सम्बन्धी आविष्कार को वर्त्तमान् काल की सबसे प्रमुख और महत्त्वपूर्ण घटना मानते हैं। इसमें सन्देह नहीं है कि परमाणु शक्ति का उपयोग यदि निर्माण के कार्य में किया जाय तो रेगिस्तान बदल कर हरे-भरे खेत बन सकते हैं, यातायात के लिये बहुत तीव्रगामी साधन उपलब्ध हो सकते हैं, बिजली इतनी सस्ती और इतनी अधिक पैदा की जा सकती है कि सारे संसार में रात्रि को भी दिन के रूप में बदला जा सकता है। इस प्रकार खेती, कारखानों, गाँवों, शहरों इत्यादि में ऐसी क्रान्ति लाई जा सकती है कि निर्धनता का नाम-निशान भी न रहे और यह संसार एक अजूबा-सा (Wonder-land) बन जाय। परन्तु आप देख रहे हैं कि परमाणुशक्ति का उपयोग रचनात्मक कार्यों (Constructive Purposes) की बजाय अधिकतर विनाशकारी कामों के लिये किया जा रहा है। साइंस पावर (विज्ञान बल; Science Power) द्वारा जो सामान बन रहा है वह या तो 'अल्प काल' के लिये सुख देने में या विनाश ही की तयारी में काम आ रहा है। उदाहरण के तौर पर आप जानते हैं कि आज तक असंख्य डालर और अनगिनत रूबल (रूसी मुद्रा) परमाणु बम बनाने के कार्य पर खर्च हो चुके होंगे।

साइंस पावर (Science Power) अथवा परमाणु-शक्ति की सूक्ष्मता को अथवा उसके विस्तृत एवं क्रान्तिकारी प्रभाव को देखकर कोई भी व्यक्ति इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि परमाणु-शक्ति एक बहुत-भारी शक्ति है और एक कमाल की चीज़ है। परन्तु दूसरी ओर वर्तमान युग में इससे भी एक अधिक प्रबल शक्ति काम कर रही है, जिसे परमात्मिक-शक्ति अथवा साईलेन्स पावर (Silence power) कहना चाहिये। इस शक्ति से कोई अधिक महान् शक्ति होती ही नहीं है। इस शक्ति द्वारा मनुष्य की काया-कल्प हो रही है और संसार में समुचित क्रान्ति आ रही है। परमाणु शक्ति का आविष्कार तो पश्चिमी देशों में हुआ है परन्तु ज्ञानसूर्य परमपिता परमात्मा का अवतरण इधर पूर्व में भारत देश में हुआ है। परमाणु-शक्ति को जानने वाले वैज्ञानिक साइंस द्वारा ऐटामिक पावर के कार्यों में लगे हुए हैं। इधर भारत में परमपिता परमात्मा साईलेन्स पावर द्वारा मनुष्य की आत्मिक शक्ति बढ़ाने का अत्यन्त महान् कर्तव्य कर रहे हैं।

परमपिता परमात्मा सहज ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग सिखाकर मनुष्यात्माओं के संस्कारों को शुद्ध कर रहे हैं और उनके कर्मों में पवित्रता का बल भर रहे हैं। इससे ही विश्व में शान्ति की शक्ति बढ़ रही है और वह दिन दूर नहीं जबकि सारे विश्व में शान्ति स्थापन हो जायेगी। जहाँ इस शान्ति-शक्ति की क्रिया अभी शुरू नहीं हुई वहाँ विज्ञान द्वारा मनुष्यों का जीवन कृत्रिम, सभ्यता स्नेह-रहित, वातावरण तथा अन्तःकरण अशान्त है। परन्तु इधर धीरे-धीरे शान्ति की शक्ति (Silence Power) अधिकाधिक मनुष्यों पर अपना प्रभाव डालती जा रही है और उसके प्रभाव का क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है। इस प्रकार वर्तमान् समय परमाणुशक्ति विनाश की तैयारी में और परमात्मिक शक्ति सतयुगी, सम्पूर्ण सुख-शान्ति सम्पन्न दैवी सृष्टि की पुनः स्थापना में लगी हुई है। परन्तु प्रथम का तो मनुष्य मात्र को पता है क्योंकि वह भौतिक शक्ति है किन्तु परमात्मिक शक्ति का केवल उन्हीं को परिचय है जो उसके सम्पर्क में आये हैं और जो

आध्यात्मिक पुरुषार्थ के द्वारा सृष्टि को सुख-शान्ति सम्पन्न बनाने में विश्वास रखते हैं।

वास्तव में विनाशकारी साइंस-शक्ति अथवा परमाणुशक्ति भी साईलेन्स-शक्ति अथवा परमात्मिक शक्ति ही की प्रेरणा से काम कर रही है क्योंकि अब स्वयं परमपिता परमात्मा ही की योजना के अनुसार वर्तमान कलियुगी आसुरी एवं धर्म भ्रष्ट सृष्टि का महाविनाश और सतयुगी दैवी सृष्टि की पुनः स्थापना हो रही है। परन्तु लोग नहीं जानते कि परमाणु शक्ति के आविष्कारों का क्या परिणाम होगा और यह किस विराट योजना के अधीन कार्य में आ रही है, न ही वे यह जानते हैं कि इससे उच्च जो शान्ति-शक्ति के स्रोत परमपिता परमात्मा हैं उन्हीं का कार्य वास्तव में वर्तमान युग की प्रमुखतम घटना है और इसीलिये वर्तमान युग का नाम परमाणु युग की बजाय पुरुषोत्तम युग होना चाहिये। इसी युग को हम संगमयुग भी कह सकते हैं क्योंकि एक ओर तो परमाणु शक्ति के द्वारा कलियुगी सृष्टि के महाविनाश और दूसरी ओर परमात्मा द्वारा सतयुगी पवित्र सृष्टि की स्थापना—यह दोनों कर्तव्य हो रहे हैं और वर्तमान समय दोनों युगों के मिलाप का समय है।

आज साइंस पावर (Science Power) द्वारा कुछ समय के लिये अन्तरिक्ष में स्पेसशिप (Space ship) द्वारा जाकर वहाँ जो खुशी का और ह्वेट-लैसनेस (Weightlessness) का अनुभव करते हैं, उसे वे अपनी बहुत बड़ी पहुँच समझते हैं। परन्तु इधर परमात्मा द्वारा योग शक्ति प्राप्त करके मनुष्य सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी देवपद प्राप्त करने अथवा वैकुण्ठ में जाने का पुरुषार्थ कर रहे हैं और ध्यानावस्था के द्वारा अन्तःवाहक शरीर धारण करके दिव्य दृष्टि के साधन से सूर्य, चाँद एवं तारागण से भी पार की पुरियों का भ्रमण करते, हल्केपन, अतीन्द्रिय सुख तथा उल्लास का अलौकिक अनुभव कर रहे हैं। परन्तु अभी यह 'पहुँच' जनता की जानकारी में नहीं आई। जिस दिन ये समाचार संसार के समाचार-पत्रों में प्रकाशित होंगे उस दिन संसार के लोग भारत के योग-युक्त पुरुषार्थियों के पुरुषार्थ पर तथा आत्मिक शक्ति (Spiritual Power) पर आश्चर्य करेंगे, जिसकी ओर आज स्वयं भारतवासी भी ध्यान नहीं दे रहे हैं।

शिव बाप की गैरन्टी

ब्र० कु० राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली

मेरे जिम्मे ! तेरा हर काज सँवारूँगा,
तेरे डगर के शूल सब मैं निवारूँगा।
तू बस सिर्फ इक काम कर !
अशरीरी बन ! मुझ बाप को याद कर !!

तूफाँ ! आ जाएँ भले ही कितने,
उड़ जाएँगे होकर तिनके जितने,
भले हो जाएँ विपरीत सभी,
न होगा बाँका तेरा बाल भी कभी,
तेरी मदद को कदम में पदम बिछाऊँगा।
मेरे जिम्मे ! तेरा हर काज सँवारूँगा !!

तू बस सिर्फ इक काम कर !
निर्संकल्प भव ! मुझे याद कर !!

आते हैं सीन तो चले भी जाएँगे, थामना नहीं,
ज़रूरी हैं टैस्ट मज़बूती के लिए, काँपना नहीं,
एकाकी नहीं तू अविनाशी सहारा है,
कोई साथ न दे संग तेरे साथ हमारा है,
ओटूँगा हर बात, तेरी हर गुत्थी सुलझाऊँगा
मेरे जिम्मे ! तेरा हर काज सँवारूँगा
तू बस ! सिर्फ इक काम कर।
श्रीमत पे चल ! मुझे याद कर॥

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० लक्ष्मण, सत्यनारायण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित

इन्दौर—मध्य प्रदेश के राज्यपाल प्रोफेसर एम० के० चांडी जी इन्दौर में नवनिर्मित 'ओमशांति भवन' में पधारे। सर्वप्रथम पुलिस बैन्ड द्वारा राष्ट्रीय गीत की धुन बजाकर सलामी दी गयी, तत्पश्चात दो कन्याओं द्वारा महामहिम राज्यपाल महोदय का तिलक लगाकर एवं गुलदस्ते भेंट कर स्वागत किया गया। स्वागत के पश्चात् राज्यपाल महोदय ने ओमशान्ति भवन में मुर्तियों से सुसज्जित नवीन संग्रहालय का अवलोकन किया। तत्पश्चात प्रो० चांडी जी ने कुछ समय योग कक्ष में परमात्मा के ध्यान में व्यतीत किया। इसके उपरान्त राज्यपाल महोदय ने बड़े ही सौहार्द्र-पूर्ण वातावरण में कुछ बहन-भाइयों के साथ बैठकर ज्ञान चर्चा की एवं संस्था की पूरी जानकारी प्राप्त की। मुख्यालय माउण्ट आबू की यात्रा के निमंत्रण पर गम्भीरता से विचार कर हर संभव प्रयास करने का आश्वासन दिया।

माऊंट आबू—भारत वर्ष के ४० राजयोगी चिकित्सकों ने राजयोग अनुसंधान के मुख्य केन्द्र आबू पर्वत पर २८ अक्तूबर से ३१ अक्तूबर तक "शारीरिक बीमारियों का कारण मानसिक तनाव जो कि राजयोग से ही स्थाई रूप से दूर किया जा सकता है" इस विषय पर भिन्न-भिन्न रूप से अनुसन्धान किया।

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी ने अनुसन्धान शिविर के उद्घाटन भाषण में डाक्टरों से निवेदन किया कि शारीरिक बीमारियों के इलाज के साथ-साथ राजयोग के स्वानुभव से आत्मा की सच्ची सेवा करें ताकि आज का दुखी मानव सदा के लिए बीमारियों से मुक्त हो जाये।

ईश्वरीय सेवा के क्षेत्र में एक नया प्रयोग "आध्यात्मिक संगीत प्रतियोगिता"

अहमदाबाद में एलिसब्रिज व मणिनगर सेवा केन्द्रों की ओर से ईश्वरीय सेवा का एक नया प्रयोग "आध्यात्मिक संगीत स्पर्धा" के रूप में किया गया। इस संगीत स्पर्धा का आयोजन ३ अन्य संस्थाओं—लायन्स क्लब, लिओ क्लब तथा जैन सांस्कृतिक केन्द्र—के सहयोग से किया गया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य युवा वर्ग में आध्यात्मिक सँगीत के प्रति रुचि जगाना, उन्हें प्रोत्साहन देना तथा उनमें छिपी संगीत प्रतिभा की खोज करना था जिससे कि उनके इस गुण को ईश्वरीय सेवा में लगाया जा सके। यह उद्देश्य बहुत सफल रहा।

फाइनल संगीत स्पर्धा का आयोजन टाऊन हाल में किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन अहमदाबाद के मेयर भ्राता जेठा भाई परमार ने किया। निर्णायक थे अहमदाबाद दूरदर्शन के डायरेक्टर भ्राता ज्योतिधर देसाई, प्रसिद्ध संगीतकार भ्राता अतुल देसाई तथा भ्राता क्षेमू दिवेठिया। संगीत स्पर्धा के लिए इनाम की शील्ड भी बनाई गयी थी। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय को इनाम दिया गया तथा अन्य १७ प्रतियोगियों को प्रमाण पत्र भी भेंट किए गये। इस कार्यक्रम द्वारा अनेक मुख्य व्यक्तियों की ईश्वरीय सेवा की गयी। तथा युवा वर्ग के अन्दर आध्यात्मिक संगीत व भजन के प्रति उत्थान की भावना जागृत हुई।

चंद्रपुर—सेवाकेन्द्र की ओर से आत्माओं की ज्योति जगाने हेतु ज्यूबिली हाईस्कूल में विश्व कल्याण आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया था। इस मेले का उद्घाटन महाराष्ट्र राज्य के सार्वजनिक बांध काम विभाग के राज्यमंत्री तथा चंद्रपुर के पालक मंत्री माननीय श्रीमती यशोधरा बजाज द्वारा तथा ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की देहली क्षेत्रीय प्रशासिका राजयोगिनी ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर चन्द्रपुर ज़िले के खासदार भ्राता शांताराम जिलाधीश, भ्राता राजीव सिन्हा, गडचिरोली जिले के जिलाधीश भ्राता रत्नाकर गायकवाड़, और चन्द्रपुर जिला परिषद के मुख्य कार्यपालन अधिकारी भ्राता सुभाषचंद्र उपस्थित थे।

इस मेले में राजयोग शिविर का भी आयोजन किया गया। रात को चैतन्य नवदुर्गा की झाँकियों का भी प्रदर्शन किया गया। मेले का विशेष समाचार नवभारत, तरुण

भारत लोकमत नामक दैनिक अखबारों में विस्तृत समाचार प्रकाशित हुआ।

भरतपुर—समाचार मिला है कि भरतपुर में प्रतिवर्ष जिला स्तरीय एक विशाल नुमाइश लगाई जाती है इस वर्ष इस नुमाइश में "चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी" लगाई गयी जो १० दिन तक चलती रही। इस प्रदर्शनी द्वारा लगभग २० हजार आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश मिला। योग शिविर का भी आयोजन किया गया इसके साथ ही साथ अनेक धार्मिक स्थलों पर ईश्वरीय सन्देश देने के कार्यक्रम रखे गये। भरतपुर जिले के अनेक मुख्य व्यक्तियों को पीस चार्टर भेंट किए गये तथा माउन्ट आबू में होने वाली कांफ्रेस के लिए निमंत्रण दिये गये।

बीकानेर—प्राप्त समाचार के अनुसार छः हायर सेकण्डरी स्कूलों एवं महारानी सुदर्शना कालेज में युवा प्रदर्शनी का कार्यक्रम रखा गया। जिसमें छात्राओं एवं अध्यापकों ने भाग लिया। रोटरी क्लब में "शान्ति की शक्ति" पर विशेष प्रवचन हुआ। अनेक सदस्यों ने राजयोग के अभ्यास करने की रुचि प्रगट की।

सूरतगढ़—रोटेरी क्लब में मानसिक शान्ति और राजयोग विषय पर प्रवचन हुआ अनेक आत्माओं ने भाग लिया। एक जैन साधवी के दीक्षा समारोह पर ब्रह्माकुमारी बहनों का प्रवचन हुआ इस अवसर पर जैन समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे।

हैदराबाद—समाचार मिला है कि हैदराबाद पावन नदी के संगम स्थान पर गुरु पूर्णिमा अर्थात डुबकी पूनम के दिर आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी। इस प्रदर्शनी द्वारा लगभग १०,००० आत्माओं को ज्ञान स्नान कराया गया। इसके परिणाम स्वरूप अनेक आत्मायें स्थानीय सेवाकेन्द्र पर पर पधार कर लाभ प्राप्त कर रही हैं।

आनन्द—समाचार मिला है कि लायन्स क्लब के रात के प्रोग्राम में अपनी संस्था की ओर से चैतन्य देवियों की झाँकी का प्रोग्राम रखा गया था। इसके साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी रखा गया। रामवाड़ी एरिया में शान्ति शिविर का भी आयोजन किया गया।

राजनांदगांव—सेवा केन्द्र की तरफ से खैरागढ़ और राजनांदगांव में "जीवन दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी" लगायी गई। खैरागढ़ में प्रदर्शनी का उद्घाटन वहाँ की विधायिका श्रीमती रश्मिदेवी ने किया। राजनांदगांव में 'जीवन दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी' का उद्घाटन दिग्विजय विश्वविद्यालय के प्राचार्य भ्राता मेघनाथ कनौज ने किया।

आर्वी—ईश्वरीय सन्देश देने हेतु एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। आर्वी शहर के माननीय व्यक्ति, व्यापारी वर्ग, डाक्टरस, पत्रकार इत्यादि व्यक्ति पधारे थे। यहाँ के आमदार भ्राता शिवचरण जी चूड़ीवाले प्रमुख अतिथि थे।

मुधोल—समाचार मिला है कि विशेष अध्यापक सेवा मास मनाया गया। अनेक शिक्षकों व अधिकारी गणों को साप्ताहिक कोर्स कराया गया जिससे उनके जीवन में विशेष परिवर्तन आया। इसके अलावा ज्ञानेश्वर मन्दिर में ईश्वरीय सन्देश देने का कार्यक्रम रखा गया। जिसमें अनेक मुख्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

अलीगढ़—नगर में प्रथम बार "विश्व बन्धुत्व शान्ति मेला" का आयोजन २८ अक्तूबर से ६ नवम्बर तक गांधी पार्क में रखा गया। मेले का उद्घाटन भ्राता श्री पी० एल० पुनियां (जिलाधीश अलीगढ़) व दिल्ली जोन की प्रशासिका राजयोगिनी ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर प्रेस कांफ्रेन्स का भी आयोजन किया गया। जिसमें क्षेत्रीय पत्रकारों ने भाग लिया। जिससे उन लोगों ने अपने समाचारपत्रों में मेले का विशेष समाचार प्रकाशित किया। शोभा यात्रा भी शहर के मुख्य-मुख्य भागों से निकाली गयी। ४०,००० लोगों ने मेला देखा जिसमें ५०० लोगों ने योग शिविर का कोर्स किया। लगभग १०० नये भाई-बहन क्लास के लिए तैयार हुए। मेले में विशेष आकर्षक चैतन्य देवियों की झाँकी थी। मेले के अन्तिम चार दिनों तक देवियों के बीच में श्री मति इन्द्रा गाँधी जी को भी देवी के रूप में दर्शाया गया था। समापन समारोह अलीगढ़ पुलिस अध्यक्ष द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कवि निर्भय हाथरसी जी ने अपनी आध्यात्मिक हास्यरसी कविताओं द्वारा भी लोगों को बहलाया। शिवध्वज को आपने सम्मानित करके अपने मस्तक व दिल से लगाया। इस मेले के फलस्वरूप हाथरस में भी मेला हो रहा है।

ऊंझा—समाचार मिला है विसनगर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी व राजयोग शिविर का आयोजन किया गया जिससे अनेक आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया। ऊंझा में शिक्षकों के स्नेह मिलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर शिक्षा मंडल के प्रमुख भ्राता जशु भाई और रोटरी क्लब के सेक्रेटरी परषोत्तम भाई परीख पधार थे। इस स्नेह मिलन द्वारा आदर्श शिक्षक बनने की प्रेरणा ली।

"दिवंगत श्रीमती इन्द्रा गांधी जी के निमित्त स्मृति सभा"

बम्बई—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के कोलाबा स्थित सेवाकेन्द्र से समाचार मिला है कि भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्द्रागांधी के आकस्मिक निधन पर श्रद्धांजलि देने के लिए १० नवम्बर को सेवाकेन्द्र पर एक स्मृति सभा का आयोजन किया गया। जिसमें नेहरू मेमोरीयल ट्रस्ट की माँ जी प्रेजीडेन्ट तथा वर्तमान बोर्ड मेम्बर नामीग्रामी महिला श्रीमती बकुला रजनी पटेल, महाराष्ट्र स्टेट वीमेन काउन्सील की प्रमुख श्रीमती माथुर, सोशल वेलफेयर बोर्ड की प्रेजीडेन्ट श्रीमती आलू छिब्बर, लायोनेस की प्रेजीडेन्ट श्रीमती मीठा श्रोफ, नामीग्रामी उद्योगपति तथा ब्लाइन्ड एसोशियेसन के मुख्य कार्यवाहक तथा नामीग्रामी सोशल वर्कर रहमत फाज़ल भाई, महाराष्ट्र स्टेट के ला और एज्यूकेशन की जाइंट सेक्रेटी श्रीमती शान्ता दिवान, प्रोफेसर पार्वती अडवानी, सिन्धी समाज के प्रेजीडेन्ट कन्हैयालाल खोतवानी, प्रसिद्ध उद्योगपति तथा सोशलवर्कर श्रीमान रूपाणी आदि प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया। ब्रह्माकुमारी उषा बहन ने दिवंगत प्रधानमंत्री जी को श्रद्धांजली देते हुए कहा कि देश तथा समग्र विश्व में एकता तथा अखंडता कायम रखने के लिए आत्मिक स्नेह तथा शान्ति का वातावरण बनायें। जिसके लिए श्रीमती इन्द्रा जी ने अपने अन्तिम श्वास तक प्रयास किया।

पटना—प्राप्त समाचार के अनुसार दिवंगत प्रधानमंत्री श्रीमती इन्द्रा गांधी जी का अस्थी कलष जब पटना के कृष्णा मेमोरियल हाल में रखा गया तो उसी समय हाथों में हार तथा अगरबत्ती लिए हुए कुछ सफेद पोशधारी राजयोगी भाई बहनों का एक समूह अपनी प्रिय नेता को श्रद्धांजली देने उस स्थान पर पहुंचा। बिहार के मुख्य मंत्री तथा अन्य उपस्थित अनेक मंत्रीगणों तथा गणमान्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों के समक्ष पटना सेवाकेन्द्र की इन्चार्ज ब्र० कु० कुन्ज बहन ने श्रीमती इन्द्रा गांधी जी की विशेषताओं पर प्रकाश डाला तथा श्रद्धांजली देते हुए सबको ३ मिनट विशेष शान्ति की अनुभूति कराई। उस समय आध्यात्मिक गीत धीमी ध्वनि में बज रहा था "शान्ति के पथ पर चलो···शान्ति है स्वधर्म तुम्हारा!' गीत बजते ही चारों ओर एक अद्भुत शान्ति छा गई। यह गीत सभी को बहुत पसन्द आया तथा उनके सचिव के आग्रह पर आध्यात्मिक गीतों की यह कैसेट दी गई जो सारा समय बजती रही।○

पाटन सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित चैतन्य देवियों की झांकी का उद्घाटन तालुका खरीद-वेचाग संघ के मैनेजर भ्राता भोगीलाल पटेल जी कर रहे हैं।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ६/१६ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा, दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70